



# आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक



O  
C  
M  
Y  
B

वर्ष -12 अंक - 114

प्रयागराज, बुधवार 15 जुलाई, 2026

पृष्ठ- 8

मूल्य : 3.00 रुपये

## ईरानी हमले में भारतीय की मौत, डिप्लोमेट तलब, होर्मुज में टैंकरों हमले किए थे; अमेरिका की ईरान पर 5 घंटे बमबारी

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। ईरान के होर्मुज में हालिया हमलों

कमांड (सेंटकॉम) के मुताबिक, करीब पांच घंटे तक चले हमलों

ड्रोन से हमला किया। ईरान की नौसैनिक क्षमता को निशाना बनाया। ईरान बोला- होर्मुज पर कंट्रोल नहीं छोड़ेंगे: सुप्रीम लीडर के सलाहकार मोहम्मद मोखबर ने कहा कि होर्मुज पर नियंत्रण बनाए रखेंगे। अमेरिका के दखल और दबाव के आगे नहीं झुकेंगे। दावा- रूस का स्पेशल कमांड एयरक्राफ्ट तेहरान पहुंचा: अमेरिका-ईरान तनाव के बीच रूस का स्पेशल कमांड एयरक्राफ्ट ट-214पीयू तेहरान पहुंचा। यह विमान परमाणु या बड़े युद्ध के दौरान राष्ट्रपति और सेना के कमांड सेंटर के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ट्रम्प बोले- ईरान के नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई 90फीसदी खत्म:-अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया है कि हालिया अमेरिकी और इजराइली हमलों में ईरान के नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई 90फीसदी खत्म हो चुके हैं। साथ ही ईरान का शीर्ष सैन्य नेतृत्व भी लगभग पूरी तरह खत्म हो गया है। फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में ट्रम्प ने कहा, 'ईरान के पास अब न नौसेना बची है, न वायुसेना। उसका एयर डिफेंस सिस्टम खत्म हो चुका है और उसके प्रमुख नेता मारे जा चुके हैं।'



में एक भारतीय की मौत हो गई, जिसके बाद भारत के विदेश मंत्रालय ने ईरान के उप राजदूत मोहम्मद जवाद हुसैनी समेत ईरानी डिप्लोमेट्स को तलब किया। विदेश मंत्रालय ने इस घटना पर ईरानी मिशन से जवाब मांगा और गंभीर चिंता भी जताई। दरअसल, होर्मुज स्ट्रेट में ईरान ने यूएई के दो तेल टैंकरों पर क्रूज मिसाइलों से हमला किया था। यूएई के रक्षा मंत्रालय के मुताबिक इस हमले में 6 भारतीयों समेत 8 लोग भी घायल हैं। वहीं, अमेरिका ने भी ईरान पर बड़े पैमाने पर जवाबी सैन्य कार्रवाई की। अमेरिकी सेंटर

में बुशहर, चाबहार, जास्क, कोनार्क, अबू मूसा और बंदर अब्बास स्थित सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। पिछले 24 घंटे के 4 बड़े अपडेट्स:- ट्रम्प का बड़ा ऐलान- होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों पर 20फीसदी टैक्स-अमेरिका होर्मुज स्ट्रेट की सुरक्षा करेगा। इसके बदले हर कार्गो पर 20फीसदी शुल्क वसूलेगा। ईरानी जहाजों और उसके ग्राहकों पर नई पाबंदियां लागू कीं। अमेरिका ने ईरान के सबमरीन और नेवल बेस पर हमला किया:-सेंटकॉम ने बंदर अब्बास स्थित सबमरीन और नेवल मेंटेनेंस फैसिलिटी पर सी-

## ब्रिटेन में मंदिर की जगह मुस्लिमों को बेचने पर विवाद, हिंदू समाज ने हाई कोर्ट में याचिका लगाई

लंदन। लंदन से 120 किमी दूर पीटरबरो में 40 साल पुराने मंदिर



और कम्युनिटी सेंटर की बिक्री को पर विवाद हो गया है। पीटरबरो सिटी काउंसिल ने न्यू इंग्लैंड कॉम्प्लेक्स को नीलामी के बाद एक मुस्लिम संस्था, यूनाइटेड किंगडम इस्लामिक मिशन, को बेचने का फैसला किया है। इसी परिसर में भारत हिंदू समाज का मंदिर चलता है, जो शहर और आसपास रहने

नहीं। मंदिर बंद होने से 56 किमी दूर जाने को मजबूर होंगे हिंदू-भारत हिंदू समाज का कहना है कि पीटरबरो का यह मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि इलाके के 4,000 हिंदुओं का एकमात्र सामाजिक-सांस्कृतिक केंद्र भी है। यदि यह परिसर बंद होता है, तो हिंदुओं को पूजा-अर्चना

## नीलामी की प्रक्रिया गलत होने का आरोप

वाले हजारों हिंदुओं का प्रमुख पूजा और सांस्कृतिक केंद्र है। फैसले से नाराज भारत हिंदू समाज ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर बिक्री प्रक्रिया को चुनौती दी है। भारत हिंदू समाज संगठन का आरोप है कि काउंसिल ने मंदिर की करीब 40 साल पुरानी धार्मिक और सामुदायिक भूमिका को नजरअंदाज किया। नीलामी के मूल्यांकन में भी गंभीर खामियां रही। बता दें कि फरवरी 2026 में हाई कोर्ट ने अंतिम रोक लगाते हुए काउंसिल को बिक्री पूरी करने जैसे किसी भी कदम से रोक दिया

व त्योंहारों के लिए निकटतम मंदिर (कैब्रिज-56 किमी) या (लेस्टर-64 किमी) का रुख करना पड़ेगा। नीलामी में खामियां, समीक्षा बिना मंजूरी दी गई-भारत हिंदू समाज का आरोप है कि बिक्री के दौरान दोनों पक्षों की बोलियों का ठीक मूल्यांकन नहीं हुआ। अदालत में संगठन ने कहा कि काउंसिल ने जांच और स्कोरिंग में गलतियां कीं। इसके बाद काउंसिल सदस्यों ने उन्हीं सिफारिशों को पड़ताल के बिना स्वीकार कर लिया। संगठन का कहना है कि मामला केवल ऊंची बोली का नहीं, बल्कि धार्मिक स्थल का भी है।



राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र  
RNI NO:-UPHIN/2015/63398  
प्रयागराज से प्रकाशित

\*आधुनिक समाचार\* आधुनिक भारत की नई आवाज

अंकपत्र, LIC बांड, रजिस्ट्री पेपर, लाइसेंस खो गया, गुमशुदा, नाम, पता, जन्मतिथि परिवर्तन, अन्य कामर्शियल विज्ञापन उचित दर पर छपवाने के लिए सम्पर्क करें। +91 79914 85344

## लंबी जंग की तैयारी...!

## ऑपरेशन सिंदूर के बाद रु10 लाख करोड़ की डिफेंस डील फिक्स, हथियारों की खरीद का पैटर्न बदला

नयी दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की रक्षा खरीद का पैटर्न तेजी से बदला है। पिछले 14 महीनों में मंजूर रिकॉर्ड प्रस्तावों से संकेत मिलता है कि सेना को अब सिर्फ सीमित जवाबी कार्रवाई के लिए नहीं, बल्कि लंबी और मल्टीलेवल वॉर के लिए तैयार किया जा रहा है। डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल ने संघर्ष के बाद से 55 प्रस्तावों को मंजूरी दी, जिनकी कुल कीमत 9.80 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा है। यह रकम एक साथ खर्च नहीं होगी, बल्कि कई साल में अलग-अलग सौदों, निर्माण कार्यक्रमों और आधुनिकीकरण योजनाओं पर लगेगी। तैयारी की वजह युद्ध छिड़ना अब सामान्य बात होती जा रही है। दूसरे, जंग छिड़ने के बाद उसे रोकना आसान नहीं रह गया है और तीसरी बात दुश्मन की कोशिश यह होती है कि लंबी और आर्थिक रूप से चोट पहुंचाने वाले सैन्य संघर्ष को जारी रखा जाए। नए प्रस्ताव में लक्ष्य महीनों तक हथियार, मरम्मत में तेजी और रसद बनाए रखना है। रक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि यूक्रेन और पश्चिम एशिया के लंबे संघर्षों ने भारत की सैन्य सोच



की डिमांड बढ़ी-ऑपरेशन सिंदूर में ब्रह्मोस, आकाश, लॉन्चरिंग म्युनिशन और नेत्र जैसे भारतीय हथियारों के इस्तेमाल के बाद दुनिया में इनकी मांग तेजी से बढ़ी है। कई देशों ने इन्हें खरीदने में रुचि दिखाई है। कुछ देशों के साथ हजारों करोड़

80 साल बाद ऑस्ट्रेलिया अमेरिका और जर्मनी की मदद से जापान बनाएगा केंद्रीय खुफिया एजेंसी टोकियो। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार जापान एक



केंद्रीकृत खुफिया एजेंसी बनाने की तैयारी कर रहा है। प्रधानमंत्री सनाए ताकाइची की सरकार इसके लिए अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी जैसे सहयोगी देशों से तकनीक, साइबर सुरक्षा, स्टाफिंग और खुफिया समन्वय के ढांचे पर सलाह ले रही है। करीब 407 मिलियन डॉलर के बजट वाली नई एजेंसी के दिसंबर तक काम शुरू करने की उम्मीद है। इसमें शुरूआती चरण में सॉफ्टवेयर इंजीनियर, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ और विदेशी संपर्क अधिकारियों सहित सैकड़ों

संस्थानों में खुफिया कार्य से जुड़े लगभग 33 हजार अधिकारियों के बीच सूचना साझा करने और विश्लेषण का केंद्रीय केंद्र बनेगी। रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका जापान को साइबर सुरक्षा और औद्योगिक जासूसी रोकने के उपायों पर सलाह दे रहा है। ऑस्ट्रेलिया विभिन्न मंत्रालयों के बीच बेहतर समन्वय की रणनीति साझा कर रहा है, जबकि जर्मनी की विदेशी खुफिया एजेंसी (उ) भी नई एजेंसी की संरचना और इंटरलिंक्स साझेदारी पर चर्चा कर चुकी है।

## जर्मनी यूक्रेन को देगा 50 हजार अटैक ड्रोन, 9 करोड़ यूरो की डील की फंडिंग करेगा

बर्लिन। जर्मनी यूक्रेन के लिए 50,000 एफपीवी (फर्स्ट-पर्सन व्यू



अटैक ड्रोन खरीदने का वित्तपोषण करेगा। समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी है। रिपोर्ट के अनुसार, इस सौदे की अनुमानित कीमत करीब 9 करोड़ यूरो (10.3 करोड़ डॉलर) के अनुसार, स्काईफॉल ने इस सौदे में जर्मनी की भागीदारी की पुष्टि की है, लेकिन और जानकारी देने से इनकार कर दिया। वहीं, जर्मनी और यूक्रेन के रक्षा मंत्रालयों ने इस रिपोर्ट पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की है।

## वंदे मातरम् हाइ की तरह रट रहे मुस्लिम बच्चे, बंगाल के मदरसों में गाने का आदेश

कोलकाता। 19 मई को पश्चिम बंगाल के सरकारी

बाद में तुणमूल कांग्रेस की सरकार ने कभी मदरसों की



मदरसों में आदेश आया कि बच्चों के प्रार्थना के दौरान सबसे पहले वंदे मातरम् गाना होगा। इसके बाद से टीचर स्कूलों में हर दिन बच्चों को गाने की तैयारी करवा रहे हैं। दूरदराज के एरिया में ज्यादातर मुस्लिम बच्चे सिर्फ बांग्ला जानते हैं। वंदे मातरम् के शुरुआती दो छंद संस्कृत में हैं, इसलिए टीचर बच्चों को स्पीकर या मोबाइल पर गीत सुना रहे हैं। पश्चिम बंगाल में पहली बार बीजेपी की सरकार आई है। पहले लेफ्ट और

प्रार्थना में वंदे मातरम् को अनिवार्य नहीं किया। अभी जिस वक्त वंदे मातरम् गाने का आदेश आया, तब गर्मी की छुट्टियां चल रही थीं। अब स्कूल खुलने के बाद क्या स्थिति है, ये जानने एक न्यूज पोर्टल अलग-अलग जिलों के 5 मदरसों और स्कूलों में पहुंची। उन्होंने बताया- सरकारी आदेश है कि वंदे मातरम् गीत के सभी 6 अंतरे गाना है। प्रार्थना के दौरान सिर्फ दो अंतरे गाए, ऐसा क्यों? आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

## पीओके में प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई को लेकर भारत नाराज, पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराने की अपील

कश्मीर। भारत ने

है। महिलाओं और बच्चों के साथ भी सख्ती बरती गई है। इंटरनेट



(पीओके) में प्रदर्शनकारियों पर कथित पुलिस कार्रवाई की कड़ी निंदा की है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि पाकिस्तान ने महिलाओं और बच्चों सहित आम नागरिकों के खिलाफ अत्यधिक बल प्रयोग किया, इंटरनेट सेवाएं बंद कीं और आवश्यक राहत सामग्री की आपूर्ति भी रोक दी। नई दिल्ली में आयोजित साप्ताहिक प्रेस कॉन्फ्रेंस में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, 'पाकिस्तान ने अत्यधिक पुलिस बल का इस्तेमाल किया

ब्लैकआउट लागू किया गया है और जरूरी तथा मानवीय सहायता की आपूर्ति रोक दी गई है।' उन्होंने कहा कि भारत अपेक्षा करता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय पाकिस्तान सरकार को इन कार्रवाइयों के लिए जवाबदेह ठहराए। विदेश मंत्रालय के अनुसार, पीओके में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई गंभीर चिंता का विषय है और वहां के लोगों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए।

## 'शेख हसीना लौटें, कानून का सामना करें', बांग्लादेश सरकार बोली- वापसी का स्वागत है

ढाका। बांग्लादेश सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की

अगस्त 2024 में छात्र आंदोलन के दौरान सत्ता से बेदखल होने



संभावित देश वापसी का स्वागत करते हुए कहा है कि उन्हें अदालत का सामना करना होगा। सरकार का कहना है कि उनके खिलाफ चल रही कानूनी प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होगी और अदालत का फैसला कानून के अनुसार लागू किया जाएगा। प्रधानमंत्री के सूचना एवं रणनीति सलाहकार जाहदे उर रहमान ने मंगलवार को मीडिया से कहा कि सरकार चाहती है कि शेख हसीना देश लौटें ताकि न्यायिक प्रक्रिया पूरी हो सके। 78 वर्षीय शेख हसीना

के बाद भारत आ गई थीं और तब से यहीं रह रही हैं। नवंबर 2024 में ढाका के विशेष न्यायाधिकरण ने छात्र आंदोलन पर कथित दमन और मानता के खिलाफ अपराध के मामले में उन्हें अनुपस्थिति में मौत की सजा सुनाई थी। फैसले के बाद से बांग्लादेश सरकार भारत से उनके प्रत्यर्पण की मांग कर रही है। वहीं, शेख हसीना अपने खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों, दोषसिद्धि और मौत की सजा को राजनीतिक रूप से प्रेरित कार्रवाई बता चुकी है।



## ‘विकास में पारदर्शिता से भाग रही नगर पंचायत चिरैयाकोट!’

**आरटीआई का जवाब न मिलने पर पत्रकार ने उपजिलाधिकारी के यहां प्रथम अपील,अधिकारियों की चुप्पी से बढ़ा संदेह**

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मऊ। मऊ के चिरैयाकोट नगर पंचायत में विकास कार्यों और

विजय उपाध्याय का कहना है,‘मांगी गई सूचनाएं सीधे सार्वजनिक धन के व्यय और



सार्वजनिक धन के खर्च को लेकर पारदर्शिता पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत मांगी गई जानकारी न देने पर स्थानीय वरिष्ठ पत्रकार डिविजय उपाध्याय ने प्रथम अपीलीय अधिकारी, उपजिलाधिकारी मुहम्मदाबाद गोहना के समक्ष अपील दायर की है। आरटीआई कानून की 30 दिन की समय-सीमा बीत जाने के महीनों बाद भी जवाब न मिलने से विनीय गड़बड़ी की आशंका जताई जा रही है। क्या मांगी थी जानकारी? पत्रकार विजय उपाध्याय ने 05 मई 2026 को नगर पंचायत कार्यालय में आरटीआई आवेदन दिया था। इसमें उन्होंने 01 अप्रैल 2024 से मई 2026 तक हुए विकास कार्यों का पूरा व्योरा मांगा था-1. स्ट्रीट लाइट की खरीद व रखरखाव पर खर्च, 2. सफाई व्यवस्था पर हुआ खर्च, 3. टेंडर प्रक्रिया और उससे जुड़े दस्तावेज, 4. भुगतानों का विवरण और संबंधित पत्रावलियों की प्रमाणित प्रतियां, 30 दिन बीते, कानून की उड़ी थजियां। आरटीआई कानून के तहत जन सूचना अधिकारी अधिशासी अधिकारी ईओ को 04 जून 2026 तक जवाब देना अनिवार्य था। लेकिन हैरानी की बात है कि तय तारीख बीतने के बाद भी न तो कोई सूचना दी गई और न ही कोई पत्र भेजा गया। अपीलार्थी

## अमृता विश्व विद्यापीठम संस्थान के सहयोग से जिला कारागार में आयोजित हुआ ध्यान योग शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मा10 जनपद

से आये नारेन्द्र आनन्द व स्वेता आनन्द वेंS द्वारा अपने



न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अमित पाल सिंह के निर्देशानुसार व सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली अनिशा के मार्गदर्शन में अमृता विश्व विद्यापीठम संस्थान से आये नारेन्द्र आनन्द व स्वेता आनन्द के द्वारा जिला कारागार रायबरेली में निरुद्ध बन्धियों के मानसिक व शरीरिक्त स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया। उक्त ध्यान योग शिविर में जिला कारागार में निरुद्ध बन्धियों के द्वारा बड़ चढ़कर हिस्सा लिया गया। अमृता विश्व विद्यापीठन संस्था

उद्बोधन में बताया गया कि योग और ध्यान का नियमित अभ्यास शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। इनसे शारीरिक लचीलापन, ताकत और मानसिक शांति बढ़ती है। ये अभ्यास तनाव कम करते हैं, ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता में सुधार करते हैं और एक बेहतर व संतुलित जीवनशैली प्रदान करते हैं। इस ध्यान योग शिविर में चीफ लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल राजकुमार सिंह, जेलर हिमांशु रौतेला व उपकारापाल जन्मेजय के द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।

## वृक्ष लगाए देश बचाएं , मां की तरह निस्वार्थ जीवनभर छाया देते हैं वृक्ष : आशा यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हरहुआ/ वाराणसी। पर्यावरण

अधिक से अधिक पौधरोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।



संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आशा एस ए-वन फाउंडेशन की संस्थापिका आशा यादव ने अपने ग्राम सभा हटिया में फलदार, छायादार एवं ऑक्सीजन प्रदान करने वाले विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मां के नाम कम से कम एक पौधा अवश्य लगाए। आशा यादव ने कहा कि जिस प्रकार मां अपने बच्चों का निस्वार्थ भाव से पालन-पोषण करती है, उसी प्रकार वृक्ष भी जीवनभर बिना किसी स्वार्थ के हमें छाया, शुद्ध वायु, फल और जीवनदायी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इसलिए वृक्षों का संरक्षण और

उन्होंने कहा कि लगातार हो रही पेड़ों की कटाई के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इसका सीधा प्रभाव मौसम, तापमान और लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। यदि प्रत्येक व्यक्ति एक पौधा लगाकर उसकी नियमित देखभाल करे, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण और बेहतर जीवन मिल सकेगा। आशा यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ‘एक पेड़ मां के नाम’ अभियान की सराहना करते हुए कहा कि इस अभियान को जन-आंदोलन का स्वरूप देने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधे हमारे जीवन का मूल आधार हैं। ये न केवल शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते

हैं, बल्कि कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण को संतुलित बनाए रखते हैं। इसके साथ ही ये फल, लकड़ी, औषधीय लाभ प्रदान करते हैं तथा मिट्टी के कटाव को रोकने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने बताया कि पौधे वायु में मौजूद हानिकारक गैसों एवं धूलकणों को अवशोषित कर वातावरण को स्वच्छ और हराभरा बनाए रखते हैं। इस अवसर पर आशा एस ए-वन फाउंडेशन के मीडिया प्रभारी एवं जिला अध्यक्ष सर्वेश यादव ने कहा कि पौधारोपण से पर्यावरण, स्वास्थ्य और आर्थिक स्तर पर अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। पौधे ऑक्सीजन प्रदान कर वायु को शुद्ध करते हैं, तापमान को नियंत्रित कर छाया देते हैं तथा अपनी जड़ों के माध्यम से मिट्टी को बांधे रखकर मृदा अपरदन को रोकते हैं। इसके अलावा हरियाली मानसिक तनाव को कम करने और आसपास के वातावरण की सुंदरता बढ़ाने में भी सहायक होती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ‘एक पेड़ मां के नाम’ अभियान से पर्यावरण संरक्षण को नई दिशा मिली है। यदि प्रत्येक व्यक्ति मां के समान में कम से कम एक पौधा लगाकर उसका संरक्षण करने का संकल्प ले, तो देश स्वच्छ, हरित और प्रदूषणमुक्त वातावरण की ओर तेजी से अग्रसर होगा।कार्यक्रम में ग्रामीणों एवं क्षेत्रवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

### चकबंदी कार्यों को गुणवत्ता, पारदर्शिता और समयबद्धता के साथ कराया जाए पूर्ण- मनोज कुमार पाण्डेय

### चकबंदी से संबंधित शिकायतों एवं आपत्तियों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराया जाए सुनिश्चित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को मंत्री खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति विभाग 30प्र0 मनोज कुमार पाण्डेय ने निरीक्षण भवन में चकबंदी विभाग वेंS अधिकारियों के साथ बैठक कर

में किसानों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि किसी भी स्तर पर अनावश्यक विलंब, लापरवाही अथवा शिकायत की स्थिति उत्पन्न नहीं होनी चाहिए। मंत्री ने कहा कि चकबंदी से

अधिकारियों को अभिलेखों के रख-रखाव, राजस्व मानचित्रों के अद्यतन तथा विभागीय कार्यों की नियमित निगरानी पर भी विशेष बल दिया गया। बैठक के अंत में मा0 मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों के हितों के

### चकबंदी व्यवस्था को अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं जनहितैषी बनाने के लिए सभी अधिकारी पूरी जिम्मेदारी एवं संवेदनशीलता के साथ करें कार्य करें-मंत्री

जनपद में संचालित चकबंदी कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में उन्होंने विभिन्न गांवों में प्रगति पर चल रहे चकबंदी कार्यों, लंबित प्रकरणों के निस्तारण, राजस्व अभिलेखों के अद्यतन, आपत्तियों के समाधान मामलों की स्थिति की गहन जानकारी प्राप्त की। बैठक के दौरान मा0 मंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि चकबंदी कार्यों को पूरी पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं समयबद्धता के साथ संपन्न कराया जाए। उन्होंने कहा कि चकबंदी का उद्देश्य किसानों को सुविधाजनक एवं व्यवस्थित कृषि भूमि उपलब्ध कराना है, इसलिए प्रत्येक कार्य

संबंधित शिकायतों एवं आपत्तियों का गुणवत्तापूर्ण एवं नियमानुसार समय पर निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण कर किसानों की समस्याओं को गंभीरता से सुनें तथा उनका त्वरित समाधान करें। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि चकबंदी की प्रत्येक प्रक्रिया शासन की मंशा के अनुरूप पूर्ण पारदर्शिता के साथ संचालित हो। उन्होंने लंबित प्रकरणों की नियमित समीक्षा करने तथा निर्धारित समय-सीमा के भीतर उनका निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में

संरक्षण एवं ग्रामीण विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं तथा चकबंदी व्यवस्था को अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं जनहितैषी बनाने के लिए सभी अधिकारी पूरी जिम्मेदारी एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य करें। बैठक में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) विशाल यादव, क्षेत्राधिकारी नगर आशीष निगम, जिला पंचायत राज अधिकारी विनय सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी उबैदुर रहमान, तहसीलदार सदर आवुर्गत श्रीवास्तव, एसओसी वेगलकर सिंह, चकबंदी अधिकारी मनोज कुमार सहित चकबंदी विभाग के कार्मिक उपस्थित रहे।

## 16 जुलाई को निकलेगी भगवान जगन्नाथ जी की रथ यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बाबा जगमोहनेश्वर धाम चंद्रपुर मंदिर रायबरेली में

की रथ यात्रा पूरी पंचांग के अनुसार निकलती है इस वर्ष पांचवी रथ यात्रा दिनांक 16

गया है और उसकी भव्य सजावट कराई जा रही है ढोल नगाड़ों एवं डीजे के साथ भगवान



प्राण प्रतिष्ठित भगवान जगन्नाथ महाप्रभु की पांचवी रथ यात्रा दिनांक 16 जुलाई 2026 दिन से सुपर मार्केट होते हुए चंदपुर मंदिर पहुंचेगी जहां पर भगवान जगन्नाथ जी को अस्थाई प्रवास गुंजेचा भवन में विराजित कराया जाएगा जहां पर भक्तों को चावल का प्रसाद वितरित किया जाएगा भगवान जगन्नाथ जी की आरती होगी और प्रसाद का वितरण किया जाएगा श्री श्रीवास्तव ने बताया कि यात्रा के लिए भगवान जगन्नाथ जी का रथ तैयार हो

जुलाई को प्रातः 8:00 बजे बाबा के दरबार से मलिक मऊ रोड गुणेश होटल रामकुपाल चौराहा से सुपर मार्केट होते हुए चंदपुर मंदिर पहुंचेगी जहां पर भगवान जगन्नाथ जी को अस्थाई प्रवास गुंजेचा भवन में विराजित कराया जाएगा जहां पर भक्तों को चावल का प्रसाद वितरित किया जाएगा भगवान जगन्नाथ जी की आरती होगी और प्रसाद का वितरण किया जाएगा श्री श्रीवास्तव ने बताया कि यात्रा के लिए भगवान जगन्नाथ जी का रथ तैयार हो

जगन्नाथ जी 16 जुलाई को नगर भ्रमण पर निकलेगी रात्रि 7:30 बजे बाबा की आरती के साथ भगवान जगन्नाथ जी की आरती संपन्न होगी और विभिन्न प्रकार के पकवान भोग लगाकर के प्रसाद के रूप में वितरित किया जाएगा रायबरेली नगर वासियों से अनुरोध है कि भगवान जगन्नाथ महाप्रभु की पांचवी रथ यात्रा में सम्मिलित होकर के रथ की रस्ती को पकड़ कर के अपने जीवन को धन्य बनावे।

## देवसीपुर में पांच नए स्वयं सहायता समूह बने, महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने पर जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वालिदपुर मऊ। विकास खंड

का सत्यापन कर पंजीकरण किया गया। इस दौरान पांच नए

शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक पात्र गृहस्त्री और अंत्योदय



मुहम्मदाबाद गोहना की ग्राम पंचायत देवसीपुर में सोमवार को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के अंतर्गत विशेष सदस्यता अभियान चलाकर पात्र गृहस्त्री एवं अंत्योदय राशन कार्डधारक महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा गया। सोमवार को पंचायत भवन में आयोजित शिविर में सूबह से शाम तक बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लेकर समूहों की सदस्यता ग्रहण की। अभियान के दौरान महिलाओं के आधार कार्ड, बैंक पासबुक, मोबाइल नंबर और फोटो सहित आवश्यक दस्तावेजों

स्वयं सहायता समूहों का गठन कर उनकी सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूरी की गईं। शिविर में विकासखंड मिशन प्रबंधक रामअवध यादव, ग्राम सचिव संजय सहाय, ग्राम प्रधान बीरेंद्र कुमार राजभर, समूह सखी उमा देवी, खुशबू भारती, यूनियन बैंक करहां की बैंक सखी शशिकला देवी, सुषमा यादव, सीआरपी कुसुम शर्मा, पंचायत सहायक आरती राजभर, रोजगार सेवक जनार्दन राजभर तथा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की टीम मौजूद रही। विकासखंड मिशन प्रबंधक रामअवध यादव ने बताया कि

राशन कार्डधारक परिवार की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ने का अभियान चलाया जा रहा है। समूहों के माध्यम से महिलाओं को बैंक ऋण, प्रशिक्षण और विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि महिलाएं बकरी पालन, सूअर पालन, किराना दुकान, ब्यूटी पार्लर, कुटीर उद्योग सहित विभिन्न स्वरोजगार अपनाकर अपनी आय बढ़ा सकती हैं। अभियान का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना है।

## सेव गर्ल चाइल्ड (बेटी बचाओ) विषय पर आयोजित किया गया शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को 30प्र0

किया गया। इस जागरुकता शिविर में बताया गया कि ‘सेव

बालिकाओं को ध्यान से विभिन्न क्रियाओं के सम्बन्ध में विस्तार



राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ तथा मा10 जनपद

गर्ल चाइल्ड’ (Save Girl Child) और ‘बेटी बचाओ’ एक महत्वपूर्ण

पूर्वक जानकारी देते हुए। प्रतिदिन उन क्रियाओं को करने हेतु प्रेरित किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य स्मिता मिश्रा द्वारा बच्चियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करते हुए बताया गया कि आज बेटियां हर क्षेत्र में प्रगति कर रही हैं। जागरुकता कार्यक्रम में चीफ लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल राजकुमार सिंह के द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली के कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गयी। कार्यक्रम का संचालन पराविधिक स्वयं सेवक पवन कुमार श्रीवास्तव के द्वारा किया गया। इस जागरुकता कार्यक्रम में महिला कल्याण विभाग की जिला कोऑर्डिनेटर पूजा शुक्ला, शेफाली वर्मा, उपप्रधानाचार्य सुनीता, पराविधिक स्वयं सेवक पूनम सिंह, राजकमल, मनोज कुमार प्रजापति व पवन कुमार श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

### वृक्षारोपण महायज्ञ-2026 के अंतर्गत गुरु गोविन्द सिंह उद्यान में चित्रकला प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बीते शनिवार को

सामाजिक वानिकी प्रभाग, रायबरेली ने अपने संबोधन में कहा कि ‘वृक्ष



का संकल्प लेती है, तो भविष्य की पीढ़ियों को एकस्वच्छ, हरित एवं समृद्ध पर्यावरण प्राप्त होगा। वृक्षारोपण केवल एक अभियान नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारी है। हिंदी विषय विशेषज्ञ डॉ. संत लाल ने विद्यार्थियों की कलात्मक अभिव्यक्ति की सराहना करते हुए कहा कि कला समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम है तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं समन्वय कैनवास क्लब केअध्यक्ष अभिषेक वर्मा संयोजक आशिक अवस्थी, आदित्य भारती ज्योति बाला व अन्य जन उपस्थित रहे किया गया।

उत्के कुशल नेतृत्व एवं उत्कृष्ट व्यवस्थापन के कारण प्रतियोगिता का आयोजन अत्यंत सुव्यवस्थित, प्रेरणादायी एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों, शिक्षकों एवं आयोजकों ने पर्यावरण संरक्षण तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण एवं उनके संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया।



21वीं अमरनाथ यात्रा संपन्न की गई

रायबरेली। श्री अमरनाथ यात्री महासंघ उत्तर प्रदेश रायबरेली के अध्यक्ष राजेंद्र



अवस्थी के द्वारा 21वीं अमरनाथ यात्रा संपन्न की गई। बाबा अमरनाथ बर्फानी कीकृपा से दर्शनोपरांत सकुशल रायबरेली वापसी पर भव्य स्वागत ढोल नगाड़ों के साथ हर हर महादेव की जयकारे गूंज उठे। रायबरेलीजनमानस के द्वारा अमरनाथ यात्रा से वापसी आए जत्थे का स्वागत पुष्प वर्षा करके किया गया।श्री अमरनाथ यात्रियों का पहला जत्था 1 जुलाई को रायबरेली जनपद से रवाना हुआ था। उक्त जत्थे में रायबरेली जनपद एवं आसपास से 75 से अधिक शिव भक्त शामिल थे। लखनऊ से ट्रेन वेग द्वारा श्रद्धालुओं का जत्था जम्मू पहुंच कर चार पहिया वाहनो से पहलगाम मार्ग से चंदनवाड़ी पहुंचा। चंदनवाड़ी से पदयात्रा प्रारंभ कर प्रथम दिन पिस्सू टॉप, जोजिबल,शेषनाग पहुंच कर विश्राम किया।द्वितीय दिन महागुनसटप, पोषपती होते हुएपंचतरनी में विश्राम के पश्चात प्राकृतिक रूप से बनी गुफा में हम शिवलिंग के दर्शन के पश्चात बालटाल मार्ग से जत्थे ने वापसी की। यहीं से कटरा पहुंचकर माता वैष्णो देवी जी के दरबार

अवस्थी ने बताया कि इस वर्ष उनकी 21अमरनाथ यात्रा है। 2004 में पहली बार अमरनाथ यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। पहले की अपेक्षा आज काफी सुधार हुए हैं वर्तमान केंद्र सरकार ने अमरनाथ यात्रियों के लिए काफी दुर्गम मार्गों को सुधार कर श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान की। मंडल अध्यक्ष ने राज्यपाल माननीय मनोज सिन्हा की प्रशंसा भी किया एवं उनसे श्री अमरनाथ यात्रा को जून माह में ही शुरुआत करने की मांग की है। जिससे अधिक से अधिक लोगों को बाबा बर्फानी के हिम शिवलिंग के दर्शन प्राप्त हो सके। श्रद्धालुओं को बाबा अमरनाथ बर्फानी के दर्शन सैनिराश ना होना है। इस अवसर पर जगदीश चैनानी, महेंद्र अग्रवाल, श्रावण शुक्ल, मनीष गुप्ता, विशाले स्वर तिवारी, पंकज मिश्रा, बिपिन चंद्र पाल वर्मा, भाग्य नारायण गुप्ता, गोविंद मिश्रा, पंडित संतोष,राजेश सिंह, रामखेलावन सविता, विकास सोनी, फूलचंद्र मिश्रा, गरिमा मिश्रा, ईंदू धर दीक्षित, गंगेश चौरसिया, बिंदु दीक्षित, रमाकांत द्विवेदी, सौनू सिंह सहित अनेकों शिव भक्त उपस्थित रहे।

Gem of आधुनिक समाचार

2026

डॉ. ईशान्या राज (Dr. Ishanya Raj) का पुरस्कार नामांकन परिचय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। डॉ. ईशान्या राज एक समर्पित एवं अनुभवी



नैदानिक मनोवैज्ञानिक (Clinical Psychologist) हैं, जिन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान की हैं। वे भारत के पुनर्वास परिषद (RCI) से पंजीकृत क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट हैं तथा एम.फिल. एवं पीएच.डी. (क्लिनिकल साइकोलॉजी) की उपाधि प्राप्त हैं। उन्होंने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के अंतर्गत जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (DMHP), प्रयागराज में वर्षों तक सेवाएँ प्रदान कीं। इस दौरान उन्होंने जिला अस्पताल, न्यायालय, केंद्रीय कारागार, किशोर न्याय बोर्ड, बाल संरक्षण गृह, शैक्षणिक संस्थानों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ मानसिक स्वास्थ्य, नशा मुक्ति, आत्महत्या रोकथाम एवं मनोसामाजिक पुनर्वास से संबंधित महत्वपूर्ण कार्य किए। डॉ. ईशान्या राज ने मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता के लिए अनेक कार्यक्रमों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं जनजागरूकता अभियानों का सफल संचालन

मनोवैज्ञानिक परामर्श तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के क्षेत्र में विशेष विशेषज्ञता रखती हैं। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने शोध एवं विचार प्रस्तुत किए हैं तथा सामाजिक योगदान के लिए उन्हें 50 से अधिक राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें 'International Award Winning Psychologist' तथा 'Youth Icon' जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में वे प्रयागराज स्थित प्रमिला न्यूरो ब्रेन एंड नशा मुक्ति क्लिनिक में परामर्श सेवाएँ प्रदान कर रही हैं, जहाँ वे मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के उद्देश्य से निरंतर कार्यरत हैं। मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान, समाज सेवा, अनुसंधान, जनजागरूकता एवं पेशेवर उत्कृष्टता को देखते हुए डॉ. ईशान्या राज का नाम इस प्रतिष्ठित पुरस्कार हेतु अत्यंत उपयुक्त एवं अनुशंसनीय है।

## नेत्रोत्सव के साथ खुले भगवान जगन्नाथ के दर्शन, 16 जुलाई को निकलेगी भव्य रथयात्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। भक्त मंदिर पहुंचे और पूजा-अर्चना कर सुख-समृद्धि की दर्शन देंगे। श्रद्धालुओं को रथ खींचने और भगवान का



मंदिर सेक्टर-121 में मंगलवार को भगवान श्री जगन्नाथ, भगवान बलराम, माता सुभद्रा एवं सुदर्शन महाराज का पावन नेत्रोत्सव श्रद्धा और भक्ति के वातावरण में मनाया गया। देवस्नान पूणिमा के बाद परंपरा के अनुसार भगवान के अस्वस्थ रहने (अनसर काल) के उपरांत आज उनके नवयौवन स्वरूप के प्रथम दर्शन श्रद्धालुओं के लिए खोले गए। भगवान के दिव्य नेत्र दर्शन के लिए बड़ी संख्या में

कामना की। मंदिर समिति के अध्यक्ष प्रमोद बहल ने बताया कि 16 जुलाई को श्री जगन्नाथ जी की भव्य एवं पारंपरिक रथयात्रा श्री जगन्नाथ मंदिर, सेक्टर-121 से दोपहर 3 बजे प्रारंभ होकर सेक्टर-71 स्थित बाबा बालकनाथ मंदिर पहुंचेगी। उन्होंने बताया कि रथयात्रा में भगवान श्री जगन्नाथ, भगवान बलराम, माता सुभद्रा एवं सुदर्शन महाराज दिव्य रथ पर विराजमान होकर भक्तों को

आशीर्वाद प्राप्त करने का दुर्लभ अवसर मिलेगा। मंदिर समिति के अध्यक्ष प्रमोद बहल ने सभी श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में रथयात्रा में शामिल होकर भगवान श्री जगन्नाथ के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भगवान की रथयात्रा में शामिल होना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है और यह भक्तों के लिए आध्यात्मिक उल्लास एवं श्रद्धा का महापर्व है।

## जिलाधिकारी ने विभिन्न विकास की परियोजनाओं के भूमि अर्जन की समीक्षा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर



अनावश्यक विलंब न होने पाए। उन्होंने कहा कि किसानों एवं भू-स्वामियों को नियमानुसार

दिए गए। उन्होंने अधिकारियों को परियोजनाओं की नियमित समीक्षा करते हुए आने वाली

ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में विभिन्न विकास परियोजनाओं के भूमि अर्जन संबंधी समीक्षा बैठक आयोजित सम्पन्न हुई। बैठक में परियोजनावर भूमि अर्जन की प्रगति, लंबित प्रकरणों एवं मुआवजा वितरण की स्थिति की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि भूमि अर्जन से जुड़े सभी कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किया जाए तथा किसी भी स्तर पर

समय पर मुआवजा उपलब्ध कराया जाए और सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ लंबित मामलों का शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित करें।जिलाधिकारी ने रायबरेली-प्रयागराज, रिंगरोड फेज-2 एवं सलोन-जायस- जगदीशपुर मार्ग के अवशेष भूगतान अति शीघ्र कराए जाने के निर्देश दिए गए, पिछले एक माह में भूगतान में आपेक्षित प्रगति नहीं होने पर संबंधित सर्वे अमीनो का स्पष्टीकरण लिए जाने के निर्देश

समस्याओं का तत्काल समाधान करने तथा शासन की प्राथमिकता वाली विकास परियोजनाओं को समयबद्ध एवं पारदर्शी ढंग से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव मिश्र, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, अपर जिलाधिकारी भू0आ0/ (न्यायिक) विशाल यादव, उप जिलाधिकारी डलमऊ सत्येन्द्र सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

## योगी सरकार की योजनाओं का लाभ ले रहे युवा, कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में मिल रहा बढ़ावा

अमेरिका से लौटे रायबरेली के इंजीनियर ने बदल दी मछली पालन की तस्वीर, खड़ा किया मत्स्य पालन का सफल उद्यम,प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना ने बढ़ावा मत्स्य पालन का वायरा, तकनीक और प्रबंधन अनुभव से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिला बढ़ावा,रायबरेली में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित हुआ मत्स्य उत्पादन केंद्र, फिश हब और प्रशिक्षण केंद्र से युवाओं के लिए खुलेंगे नए अवसर,

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उत्तर प्रदेश में युवाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता से जोड़ने के लिए संचालित योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव जमीनी स्तर पर दिखाई देता है। योगी सरकार की नीतियों और योजनाओं का लाभ लेकर कई युवा रोजगार मांगने वाले नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाले बन रहे हैं। प्रदेश सरकार का जोर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में बढ़ावा देने पर है। मत्स्य पालन, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण और अन्य ग्राम आधारित कार्यों में निवेश को प्रोत्साहित करने वाली योजनाएं युवाओं को नए अवसर उपलब्ध करा रही हैं। रायबरेली में मत्स्य पालन के क्षेत्र में काम कर रहे सुजीत चौधरी ने योगी सरकार के इस विजन को थरातल पर उतारा है।

एक इंजीनियर ने बदल दी मछली पालन की तस्वीर-सुजीत चौधरी ने बताया कि वे मूल रूप से बस्ती जनपद के निवासी हैं। उन्होंने साल 2005 में बैठक की पढ़ाई पूरी और बाद में एक कंपनी के साथ जुड़ गए। साल 2007 में उन्हें कंपनी ने अमेरिका भेजा, जहां उन्होंने लगभग नौ वर्षों तक कार्य किया। उन्होंने बताया कि साल 2016 में वे भारत लौटे और नोएडा में एक सॉफ्टवेयर की शुरूआत की। कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आधारित उद्यम शुरू करने की दिशा में निर्णय लिया। इसी दौरान उन्होंने मत्स्य पालन क्षेत्र में निवेश करने का फैसला किया। 50 से ज्यादा किसानों को साथ जोड़कर कर रहे मत्स्य पालन-सुजीत ने बताया कि उन्होंने साल 2019 में रायबरेली जनपद के महाराजगंज क्षेत्र के गांव बल्ला में लगभग 10 हेक्टेयर भूमि लीज पर लेकर मत्स्य पालन की शुरुआत की थी। वर्तमान में वे इस क्षेत्र में 23 तालाबों के माध्यम से व्यावसायिक स्तर पर मछली उत्पादन कर रहे हैं। प्रतिवर्ष लगभग 500 से 600 टन मछली का उत्पादन और विपणन किया जाता है। उन्होंने बताया कि वे 50 से ज्यादा किसानों को साथ जोड़कर मत्स्य पालन से खुद के साथ- साथ दूसरों की भी आमदनी को बढ़ाने

में जुटे हैं। सुजीत ने बिचौलियों से दूरी बनाकर खुद ही सीधे ग्राहकों से जुड़कर अपना कारोबार बढ़ाया है। वे खारे पानी में होने वाली समुद्री झींगा मछली का भी उत्पादन कर रहे हैं। फिश हब और प्रशिक्षण केंद्र से युवाओं के लिए खुलेंगे नए अवसर-मत्स्य क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत वर्ष 2021 में उन्हें 8.50 लाख रुपये का अनुदान भी प्राप्त हुआ। इस सहायता ने उनके उद्यम के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अब वह इसी क्षेत्र में एक फिश हब स्थापित करने की योजना पर काम कर रहे हैं। प्रस्तावित फिश हब में आधुनिक सुविधाओं के साथ प्रयोगशाला और मत्स्य पालन से संबंधित प्रशिक्षण व्यवस्था विकसित करने का लक्ष्य है, जिससे स्थानीय युवाओं को कौशल विकास और स्वरोजगार के अवसर मिल सकें। सुजीत चौधरी जैसे उद्यमियों की ऐसी पहल दर्शाती है कि सही नीतिगत सहयोग, तकनीकी ज्ञान और उद्यमशीलता के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में भी बड़े स्तर पर आर्थिक गतिविधियां विकसित की जा सकती हैं। यह मॉडल न केवल स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ाने में सहायक है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई मजबूती प्रदान कर रहा है।

## नोएडा के डॉ. महीपाल सिंह को इंग्लैंड का प्रतिष्ठित 'एक्सीलेंस इन लीडरशिप अवॉर्ड' इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर ने दिव्यांग पुनर्वास में योगदान के लिए डॉ. महीपाल सिंह को इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर अवॉर्ड

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शहर के जाने-माने न्यूरो पाल्सी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट क्लिनिकल कार्य, शिक्षा, नेतृत्व

बाद की गई थी। इसका उद्देश्य समाज में प्रेरणादायक व्यक्तित्वों



रिहैबिलिटेशन विशेषज्ञ और फर्स्ट वन रिहैब फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. महीपाल सिंह को इंग्लैंड की प्रतिष्ठित संस्था 'इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर' द्वारा 'एक्सीलेंस इन लीडरशिप अवॉर्ड' से सम्मानित किया जाएगा। संस्था ने 9 जुलाई 2026 को जारी पत्र में इसकी घोषणा की। डॉ. सिंह को यह सम्मान दिव्यांगता, पीडियाट्रिक न्यूरोरिहैबिलिटेशन और सेरेब्रल

और सामुदायिक सेवा के लिए दिया जा रहा है। पत्र में कहा गया है कि डॉ. सिंह का कार्य यह सिद्ध करता है कि जुनून और सहानुभूति से ही दिव्यांगजनों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है। क्या है इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर-इस संस्था की स्थापना 27 सितंबर 2022 को ब्रिटिश संसद में आयोजित भारत-यूके लीडरशिप समिट के

और उनके मानवीय कार्यों को वैश्विक मंच देना है। संस्था शांति, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाली हस्तियों को सम्मानित करती है। जूरी की शिक्षाविद, वैज्ञानिक, राजनेता, स्वास्थ्य विशेषज्ञ और समाज सुधारक शामिल हैं। डॉ. महीपाल सिंह लंबे समय से नोएडा में दिव्यांग बच्चों के पुनर्वास के लिए काम कर रहे हैं।

## डीएम की अध्यक्षता में मतदेय स्थलों के सम्भाजन के संबंध में बैठक सम्पन्न

वर्तमान मतदेय स्थलों के सम्भाजन के सम्बन्ध में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों द्वारा उपलब्ध कराए गए सुझाव,उपलब्ध कराए गए सुझावों पर किया गया विचार विमर्श

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी/जिला

गया।जिलाधिकारी ने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया की निष्पत्ता,



सहित सभी आवश्यक बिंदुओं का विशेष ध्यान रखा जाए, ताकि प्रत्येक मतदाता को अपने मतप्रतिकार का प्रयोग करने में किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग की मंशा के अनुरूप राजनीतिक दलों के सुझावों को गंभीरता से लेते हुए पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी, निष्पक्ष एवं समयबद्ध तरीके से पूर्ण किया जाए। साथ ही सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करते हुए आवश्यक कार्यवाही समय से पूर्ण की जाए। बैठक के दौरान मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने भी अपने सुझाव एवं विचार प्रस्तुत किए, जिन पर जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को नियमानुसार परीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन)/ उप जिला निर्वाचन अधिकारी सिद्धार्थ, प्रभारी सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी फिरोज अहमद सहित समस्त रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, निर्वाचन से जुड़े संबंधित अधिकारी एवं मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

## डीएम ने कृषि एवं संबद्ध योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन समीक्षा की,फॉर्मर रजिस्ट्री के कार्य को शत-प्रतिशत पूर्ण कराने के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में कृषि

योजना की वर्तमान प्रगति, लाभार्थियों की संख्या, लंबित प्रकरणों एवं विभागीय कार्यों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करते



विभाग के अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में किसानों के हित में संचालित योजनाओं की प्रगति का विभागवार परीक्षण करते हुए जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी योजनाओं का लाभ पात्र किसानों तक समयबद्ध एवं पारदर्शी तरीके से पहुंचाना सुनिश्चित किया जाए। बैठक में फॉर्मर रजिस्ट्री, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), मत्स्य पालन, डेयरी विकास, मंडी विकास, पशुपालन एवं बागवानी योजना की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने प्रत्येक

हए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने फॉर्मर रजिस्ट्री को शीर्ष प्राथमिकता वाली योजना बताते हुए निर्देश दिए कि इस कार्य में और अधिक तेजी लाई जाए तथा सभी पात्र किसानों का पंजीकरण कराते हुए शत-प्रतिशत लक्ष्य निर्धारित समय सीमा के भीतर पूर्ण किया जाए। उन्होंने कहा कि फॉर्मर रजिस्ट्री किसानों को विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ सरलता एवं पारदर्शिता के साथ उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण माध्यम है, इसलिए इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत पात्र किसानों के लंबित

प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण करने, फसल बीमा योजना के प्रति किसानों को अधिक से अधिक जागरूक करने तथा एफपीओ को सशक्त बनाकर किसानों की आय बढ़ाने के लिए प्रभावी प्रयास करने के निर्देश दिए। साथ ही मत्स्य पालन, डेयरी विकास, पशुपालन एवं बागवानी से संबंधित योजनाओं का लाभ अधिकारिका पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाने तथा योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए विभागों के बीच समन्वय स्थापित करने एवं विशेष रूप से दलहन की उपज बढ़ाने के प्रयास करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को नियमित रूप से प्रगति की समीक्षा करने, निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने तथा गुणवत्ता एवं पारदर्शिता के साथ कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अखिलेश पाण्डेय सहित कृषि एवं संबद्ध विभागों के संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।



## संचारी एवं दस्तक अभियान के तहत जनपद में व्यापक जनजागरूकता और साफ-सफाई अभियान जारा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) जागरूक किया। संचारी बुखार, मलेरिया, कुष्ठ, क्षय सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री चर्चित आईएलआई (खांसी-जुकाम) जैसे लक्षणों वाले व्यक्तियों का चिन्हीकरण किया जा रहा है। अभियान के दौरान बुखार से पीड़ित व्यक्तियों की पहचान कर उनकी आरटी-किट से जांच कराई जा रही है तथा मलेरिया के धनात्मक मामलों का समयबद्ध उपचार सुनिश्चित किया जा रहा है। साथ ही खांसी-जुकाम के लक्षणों वाले 137 तथा क्षय रोग के संभावित 95



गौड़ के निर्देशन में जनपद सोनभद्र में 01 जुलाई, 2026 से संचारी रोग नियंत्रण अभियान

1,895 विद्यालयों में जागरूकता रैलियां आयोजित की जा चुकी हैं। 257 ग्रामों में प्रभात फेरियां

व्यक्तियों को चिन्हित कर आवश्यक जांच एवं उपचार हेतु स्वास्थ्य संस्थानों को संदर्भित



गौड़ के निर्देशन में जनपद सोनभद्र में 01 जुलाई, 2026 से संचारी रोग नियंत्रण अभियान

1,895 विद्यालयों में जागरूकता रैलियां आयोजित की जा चुकी हैं। 257 ग्रामों में प्रभात फेरियां

व्यक्तियों को चिन्हित कर आवश्यक जांच एवं उपचार हेतु स्वास्थ्य संस्थानों को संदर्भित

### उच्च जोखिम वाले ग्रामों में विशेष माइक्रोप्लान के तहत किया गया अभियान, रोगियों के चिन्हीकरण पर विशेष जोर

अभियान चलाया गया। इस दौरान सफाईकर्मी, पंचायत सहायक, आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं ग्राम प्रधानों की सक्रिय सहभागिता रही। टीमों ने झाड़ियों की कटाई, नालियों की सफाई, खराब हैंडपंपों का चिन्हीकरण एवं मरम्मत, हैंडपंप चबूतरों की मरम्मत तथा शौचालय निर्माण जैसे कार्यों के साथ-साथ ग्रामीणों को मच्छरजनित एवं संक्रामक रोगों से बचाव के उपायों के प्रति

झाड़ियों की कटाई, 1,137 हैंडपंपों की मरम्मत, 468 हैंडपंप चबूतरों की मरम्मत, 329 शौचालयों का निर्माण, 640 ग्रामीण एवं 676 शहरी नालियों की सफाई कराई गई। नगरीय क्षेत्रों के 60 वार्डों में फोंगिंग कराई गई, जबकि 123 सूकर पालकों का संवेदीकरण एवं 264 स्थानों पर कुर्तक नियंत्रण संबंधी गोष्ठियों का आयोजन किया गया। दस्तक अभियान के अंतर्गत घर-घर भ्रमण कर

विभाग ने जनपदवासियों से अपील की है कि वे अपने घरों एवं आसपास स्वच्छता बनाए रखें, जलभराव न होने दें, मच्छरों से बचाव के उपाय अपनाएं तथा बुखार, खांसी, जुकाम, डायरिया अथवा अन्य संक्रामक रोगों के लक्षण दिखाई देने पर तत्काल निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर जांच एवं उपचार कराएं। जनसहभागिता से ही संचारी रोगों की प्रभावी रोकथाम संभव है।

## 1 अगस्त से लागू होगी नई मूल्यांकन सूची: जिलाधिकारी ने आमजन एवं जनप्रतिनिधियों से एक सप्ताह में सुझाव एवं आपत्तियां मांगीं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद सोनभद्र में वर्ष जिससे संपत्तियों का मूल्यांकन अधिक यथार्थ एवं पारदर्शी



2026-27 की प्रस्तावित नई मूल्यांकन सूची (सर्किल रेट) के संबंध में उपजिलाधिकारियों एवं उपनिबंधकों द्वारा संशोधन, परिवर्तन एवं विलोपन संबंधी प्रस्ताव तैयार कर जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ को उपलब्ध करा दिए गए हैं। प्रस्तावित मूल्यांकन सूची खसरा संख्या आधारित अद्यतन आंकड़ों, भूमि की वास्तविक उपयोगिता तथा प्रचलित बाजार परिस्थितियों के आधार पर तैयार की गई है,

बनाया जा सके। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने प्रस्तावित मूल्यांकन सूची पर आमजन, जनप्रतिनिधियों एवं अन्य हितधारकों से एक सप्ताह के भीतर सुझाव एवं आपत्तियां आमंत्रित की हैं। प्राप्त सुझावों एवं आपत्तियों का परीक्षण कर आवश्यक संशोधन किए जाएंगे, जिसके उपरांत अंतिम मूल्यांकन सूची 1 अगस्त, 2026 से प्रभावी कर दी जाएगी।

## काला नमक धान की जैविक खेती किसानों के लिए बनी नई उम्मीद

सोनभद्र। सोनभद्र के घोरवल तहसील क्षेत्र के केवटा गांव में काला नमक धान की जैविक खेती किसानों के लिए एक नई उम्मीद लेकर आई है। कम बारिश में भी वैज्ञानिक तरीके से खेती करने पर इसकी अच्छी पैदावार होती है, जिससे किसानों को बेहतर मुनाफा मिल सकता है। केवटा गांव निवासी प्रगतिशील किसान हिमांशु कुमार सिंह ने अपने गांव में 20 एकड़ भूमि पर काला नमक धान की रोपाई की है। उनकी यह पहल क्षेत्र में इस विशेष धान की खेती को बढ़ावा देने का प्रयास है। हिमांशु सिंह ने बताया कि उन्होंने काला नमक धान के लिए 20 दिन पहले बीज डाले थे। बारिश की कमी के बावजूद, उन्होंने पंपिंग सेट का उपयोग कर लगभग 20 एकड़ में धान की रोपाई पूरी की है। यह पूरी खेती जैविक विधि से की जा रही है, जिसमें किसी भी रासायनिक उर्वरक का प्रयोग नहीं किया गया है। उन्होंने जानकारी दी कि आमतौर पर उनके क्षेत्र में सनजू 52, टेन टेन, मंसूरी जैसे मोटे धान और अमन, सोनम जैसे महीन धान की खेती होती है। काला नमक धान की खेती यहां न के बराबर है। हिमांशु ने कृषि विशेषज्ञों से संपर्क कर उनके निर्देशों के अनुसार इस वर्ष काला नमक धान की खेती शुरू की है। किसान हिमांशु सिंह को उम्मीद है कि इस वर्ष काला नमक धान की अच्छी पैदावार होगी। उनका मानना है कि इससे इलाके के अन्य किसान भी इस लाभकारी खेती के लिए प्रेरित होंगे और इसे अपनाएंगे।

## निषादराज बोट सविसडी योजना के लिए ऑनलाइन आवेदन पुनः शुरू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सहायक निदेशक fisheries.up.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते

### 24 जुलाई तक करें आवेदन, अधिक से अधिक मत्स्य पालक उठाएं लाभ

मत्स्य, सोनभद्र ने अवगत कराया है कि वित्तीय वर्ष 2026-27 में मत्स्य विभाग द्वारा संचालित राज्य सेक्टर की विभिन्न योजनाओं, विशेष रूप से निषादराज बोट सविसडी योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को अधिक से अधिक लाभ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विभागीय पोर्टल पुनः खोल दिया गया है। इच्छुक आवेदक 09 जुलाई, 2026 से 24 जुलाई, 2026 तक विभागीय पोर्टल

## ट्रक में खाना बनाते समय छोटे एलपीजी सिलेंडर में लगी आग, चालक-खलासी की सूझबूझ से टला बड़ा हादसा

सोनभद्र। सोनभद्र के बिना में वाराणसी-शक्तिनगर मुख्य मार्ग पर मंगलवार सुबह एक बड़ा



हादसा टल गया। बिना स्टैडियम के पास एक ट्रक में खाना बनाते समय छोटे एलपीजी गैस सिलेंडर में गैस रिसाव से आग लग गई। चालक और खलासी ने सूझबूझ दिखाते हुए सिलेंडर को ट्रक के केबिन से बाहर सड़क पर फेंक दिया, जिससे संभावित दुर्घटना टल गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ट्रक सड़क किनारे खड़ा था और चालक-खलासी खाना बना रहे थे। इसी दौरान गैस लीकेज के कारण सिलेंडर के निम्पल में आग लग गई। आग बुझाने

स्वास्थ्य मंत्री को ज्ञापन सौंपा, सोनभद्र मेडिकल कॉलेज, निजी अस्पतालों की अव्यवस्थाओं पर उठाए सवाल

सोनभद्र। सोनभद्र में स्वास्थ्य सेवाओं की बहाली और मरीजों की परेशानियों को लेकर काशी क्षेत्र मीडिया प्रभारी ने उत्तर प्रदेश के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक को ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन में सोनभद्र मेडिकल कॉलेज, जिला अस्पताल और निजी अस्पतालों में व्याप्त समस्याओं पर तत्काल प्रभावी कार्रवाई की मांग की गई है। ज्ञापन में बताया गया है कि सोनभद्र मेडिकल कॉलेज और जिला अस्पताल में मरीजों को पर्याप्त सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। चिकित्सकीय संसाधनों का अभाव है, वहीं सीटी स्कैन और अल्ट्रासाउंड जैसी महत्वपूर्ण जांच सुविधाओं के लिए लंबी प्रतीक्षा सूची मिल रही है। इनके सुचारु संचालन न होने से मरीजों और उनके परिजनों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों को जांच और उपचार के लिए निजी संस्थानों का सहारा लेना पड़ता है। इससे उन पर आर्थिक आर्थिक बोझ पड़ रहा है। इसके साथ ही, जिले में बिना निर्धारित मानकों के संचालित हो रहे निजी अस्पतालों और अवैध क्लीनिकों का मुद्दा भी स्वास्थ्य मंत्री के समक्ष उठाया गया। ज्ञापन में आपत्त है कि कई निजी चिकित्सा संस्थान नियमों की अनदेखी कर मरीजों का उपचार कर रहे हैं, जिससे उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है। ऐसे संस्थानों की जांच कर उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की मांग की गई है। काशी क्षेत्र मीडिया प्रभारी विपिन तिवारी ने कहा कि सोनभद्र जैसे आदिवासी और पिछड़े क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री से मेडिकल कॉलेज और जिला अस्पताल में आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने, चिकित्सकों की कमी दूर करने तथा अवैध रूप से संचालित अस्पतालों और क्लीनिकों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने की मांग की। ज्ञापन में आशा व्यक्त की गई है कि जनहित से जुड़े इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर शीघ्र सज्जन लिया जाएगा। इससे स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकेंगे, जिससे जिले के लाखों लोगों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाओं का लाभ मिल सके।



# NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE

(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)

## सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी

फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड

कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लांट, माइनिंग इण्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रॉनिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोट: फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश-विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।

Visit us at [www.nainiiti.com](http://www.nainiiti.com) Call: 9415608710, 7459860480





श्री महन्तू

अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज



## बारिश के मच्छर फैलाते डेंगू-मलेरिया, 10 लक्षणों को इग्नोर न करें, डॉक्टर से जानें बचाव के लिए 8 सावधानियां

जयपुर। बारिश के मौसम में जगह-जगह जमा पानी और नमी के कारण मच्छर तेजी से

कारण क्यों फैलती हैं? जवाब- बारिश में अधिकांश बीमारियां मच्छरों से फैलती हैं क्योंकि-

गले में दर्द। मसल्स में दर्द। बुखार के ये लक्षण इग्नोर न करें-बार-बार उल्टी या पेट दर्द हो। 3 दिन

रोल है। इम्युनिटी हमारे लिए ये जरूरी काम करती है- 1. संक्रमण से लड़ने की क्षमता



पनपते हैं। इससे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया जैसी कई बीमारियां का रिस्क बढ़ जाता है। दूषित पानी और भोजन के कारण टाइफाइड, हैजा और फूड पॉइजनिंग का जोखिम भी बढ़ता है। अक्सर लोग इन बीमारियों के लक्षणों को सामान्य समझकर इग्नोर कर देते हैं, जिससे स्थिति बिगड़ सकती है। हालांकि कुछ बुनियादी सावधानियां बरतकर इनके रिस्क को कम किया जा सकता है। इसलिए आज 'फिजिकल हेल्थ' में बारिश

बारिश में जगह-जगह पानी जमा हो जाता है। यह मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल वातावरण है। इस मौसम में नमी ज्यादा होती है। इससे मच्छर तेजी से पनपते हैं और उनकी संख्या बढ़ जाती है। बारिश के बाद घरों के आसपास रखे गमले, कुलर, टायर, बाल्टी और छतों पर जमा पानी मच्छरों का ठिकाना बनते हैं। ये मच्छर डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया जैसी बीमारियां फैलाते हैं। सवाल- किन लोगों को इन बीमारियों का रिस्क

से ज्यादा बुखार हो। दवा लेने पर आराम न हो। चक्कर आए या बेहोशी हो। सांस लेने में दिक्कत हो। सिर, आंखों में सीने में तेज दर्द हो। दर्द हो। पेशाब या उल्टी में खून आए। जोड़ों में असहनीय दर्द, सूजन हो। सवाल- घर के आसपास किन जगहों पर मच्छर ज्यादा पनपते हैं? जवाब- कुछ जगहों पर मच्छर पनपने का रिस्क ज्यादा होता है, जैसेकि- कुलर, पानी की टंकी- कई दिनों तक पानी जमा रहने से इनमें मच्छर तेजी से पनपते हैं। बाल्टी, ड्रम, खुले बर्तन- बिना ढके रखने पर इनमें पानी रुक जाता है। गमले, पौधों की ट्रे- नीचे जमा पानी मच्छरों के लिए अनुकूल जगह है। पुराने टायर, बोतलें, डिब्बे- इनमें बारिश का पानी लंबे समय तक जमा रहता है। घर के आसपास गड्ढे- निकासी न होने पर पानी लंबे समय तक जमा रहता है। नालियां, ड्रेनेज सिस्टम- गंदा और रुका पानी मच्छरों को आकर्षित करता है। फ्रिज, एसी की वाटर ट्रे- ये जगहें अक्सर नजरअंदाज होती हैं, लेकिन मच्छर यहां भी पनपते हैं। कचरे के डिब्बे, खुले कंटेनर- ढक्कन न होने पर पानी जमा हो सकता है। कंस्ट्रक्शन साइट्स- यहां गड्ढों में पानी भर जाता है। सवाल- घर के अंदर मच्छरों को पनपने से कैसे रोके? जवाब- इसके लिए कुछ आसान तरीके अपना सकते हैं- घर में कहीं पर भी पानी जमा न होने दें। कुलर, बाल्टी, फूलदान और ट्रे का पानी हर 2-3 दिन में बदलें। हफ्ते में कम-से-कम एक बार कुलर की सफाई करें। पानी के बर्तन, टंकी, ड्रम और बोतल हमेशा बंद रखें। फ्रिज/एसी की ट्रे रेगुलर साफ करें। खिड़की-दरवाजे पर जाली लगाएं। मच्छरदानी या रेपलेंट का इस्तेमाल करें। कचरा जमा न होने दें। रेगुलर सफाई करें। सवाल- बारिश में बीमारियों से बचने के लिए घर में कौन-सी सावधानियां जरूरी हैं? जवाब- इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखें- साफ और ढका हुआ पानी इस्तेमाल करें। पीने का पानी उबालकर या फिल्टर करके यूज करें। सोते समय मच्छरदानी/रेपलेंट का उपयोग करें। घर की नियमित सफाई रखें, नालियां साफ रखें। ताजा खाना खाएं और उसे हमेशा ढक्कर रखें। बाहर का कच्चा या बासी खाना न खाएं। गीले कपड़े न पहनें। खाना खाने से पहले और बाहर से आने के बाद हाथ जरूर धोएं। सवाल- बीमारियों से बचाव में इम्युनिटी का क्या रोल है? जवाब- बारिश में फैलने वाली बीमारियों, जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया और वायरल फीवर से बचाव में इम्युनिटी का बहुत महत्वपूर्ण

बढ़ाती है-मजबूत इम्युनिटी शरीर को वायरस और बैक्टीरिया से लड़ने में मदद करती है। इससे बीमारी का रिस्क कम हो जाता है। 2. बीमारी का असर कम करती है- अगर संक्रमण हो भी जाए, तो अच्छी इम्युनिटी के कारण लक्षण हल्के रहते हैं और रिकवरी जल्दी होती है। 3. बार-बार बीमारी नहीं होती है-कमजोर इम्युनिटी वाले लोग जल्दी-जल्दी बीमार पड़ते हैं, जबकि मजबूत इम्युनि सिस्टम शरीर को संक्रमण से बचाता है। 4. कॉम्लिकेशंस का रिस्क कम करती है-मजबूत इम्युनि सिस्टम ज्यादा कमजोरी होने और फ्लेटल्टस गिरने जैसी गंभीर स्थिति बनने से रोकता है। अच्छी इम्युनिटी होने का मतलब ये नहीं है कि बीमारी नहीं होगी। इसका मतलब है कि संक्रमण होने पर शरीर उसे बेहतर तरीके से लड़ पाएगा और रिकवरी भी जल्दी होगी। इसलिए मच्छरों से बचने के साथ-साथ इम्युनिटी भी मजबूत करें। सवाल- इम्युनिटी बढ़ाने के लिए क्या खाना चाहिए? जवाब- बारिश के मौसम में इम्युनिटी मजबूत रखने के लिए ऐसा खाना खाएं, जो शरीर को संक्रमण से लड़ने की ताकत दे और पाचन में भी हल्का हो-विटामिन सी-संतरा, नींबू, आंवला-इम्युनिटी मजबूत होती है। हरी सब्जियां-पालक, मेथी, लौकी, तोरई-जरूरी विटामिन-मिनरल्स मिलते हैं। हर्ब्स-अदरक, लहसुन, हल्दी-ये नेचुरल एंटीबायोटिक्स हैं। प्रोटीन-दालें, पनीर, अंडा-शरीर के लिए अनिवार्य है। प्रोबायोटिक्स-दही और छाछ-गुड बैक्टीरिया बढ़ाते हैं। ड्राई फ्रूट्स-बादाम, अखरोट, पिस्ता-जरूरी पोषण मिलता है। हर्बल ड्रिंक्स-काढ़ा, ग्रीन टी, अदरक चाय-इम्युनिटी मजबूत होती है।



में होने वाली बीमारियों की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- किन लोगों को इन बीमारियों का रिस्क ज्यादा होता है? बारिश में बीमारियों से बचने के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. रोहित शर्मा, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बारिश में कौन-सी बीमारियां फैलती हैं? जवाब- बारिश के मौसम में नमी बढ़ने से बैक्टीरिया पनपने के लिए अनुकूल वातावरण बन जाता है। साथ ही जगह-जगह पानी रुकने से मच्छर पनपते हैं। इससे इन बीमारियों का रिस्क बढ़ जाता है- मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, टाइफाइड, फूड पॉइजनिंग, हैजा, वायरल फीवर। सवाल- बारिश में अधिकांश बीमारियां मच्छरों के

ज्यादा होता है? जवाब- बारिश में फैलने वाली बीमारियों का रिस्क इन लोगों को ज्यादा होता है- जिनकी इम्युनिटी कमजोर है। गर्भवती महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग, जिन्हें अस्थमा है। जिन्हें डायबिटीज है। सवाल- डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया और वायरल फीवर में फर्क कैसे पहचानें? जवाब- लक्षणों के आधार पर इन तीनों के बीच के फर्क को समझा जा सकता है:- डेंगू-तेज बुखार (104°F तक), आंखों और मसल्स में दर्द, लाल चकत्ते, बहुत कमजोरी। मलेरिया-कंपकंपी के साथ बुखार, बुखार के बाद पसीना, हर 1-2 दिन में बुखार, कमजोरी, उल्टियां। चिकनगुनिया-तेज बुखार, जोड़ों में दर्द, शरीर में सूजन, बहुत थकान। वायरल फीवर- हल्का से मध्यम बुखार, सर्दी, खांसी,

## भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ पिछले 5 वनडे जीते, पहला मुकाबला एजबेस्टन में,बुमराह 968 दिन बाद वनडे खेलेंगे, रोहित-विराट की वापसी

बर्मिंघम। जसप्रीत बुमराह 968 दिन बाद वनडे क्रिकेट में

अनुभव टीम के लिए बेहद अहम रहेगा।बुमराह की वापसी,

अच्छा नहीं रहा है। टीम 2024 के बाद सात में से पांच द्विपक्षीय

शानदार रहा है। उन्होंने यहां 7 वनडे शतक लगाए हैं और औसत 64.9 का है। एजबेस्टन में उनका औसत 89.4 है। वहीं विराट अपनी पिछली 7 वनडे पारियों में 6 बार 50 रन स्कोर बना चुके हैं। आईपीएल 2026 में भी उन्होंने 16 मैचों में 675 रन बनाए थे। एजबेस्टन में इंग्लैंड का दबदबा- एजबेस्टन इंग्लैंड का मजबूत किला माना जाता है। टीम ने एजबेस्टन में 2015 से लगातार सात वनडे जीते हैं। पिच रिपोर्ट- एजबेस्टन की पिच पर शुरुआती ओवरों में तेज गेंदबाजों को स्विंग और सीम मूवमेंट मिलती है। इसके बाद बल्लेबाजी आसान हो जाती है। ऐसे में पहले 10 ओवर मैच के लिहाज से सबसे अहम रहेंगे। मौसम साफ रहने का अनुमान है। बारिश की संभावना नहीं है। पॉसिबल फ्लेइंग-11- भारत: रोहित शर्मा, शुभमन



वापसी करेंगे। उन्होंने 2023 वर्ल्ड कप फाइनल के बाद कोई वनडे नहीं खेला है। इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला मंगलवार को बर्मिंघम के एजबेस्टन स्टेडियम में खेला जाएगा। मैच दोपहर 3:30 बजे शुरू होगा। इस मुकाबले में रोहित शर्मा और विराट कोहली भी वनडे टीम में वापसी करेंगे। वनडे में भारत का पलड़ा इंग्लैंड पर भारी रहा है। टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ अपने पिछले 5 वनडे मुकाबले जीते हैं। ओवरऑल दोनों टीमों के बीच 110 मैच खेले गए हैं। भारत ने 61 जीते और 44 हारे हैं। 2 मैच टाई और 3 मुकाबले बेनतीजा रहे हैं। यह सीरीज भारत के लिए इसलिए भी अहम है। क्योंकि, 2027 वनडे वर्ल्ड कप में अब करीब 15 महीने का समय बचा है। भारत ने हाल ही में इंग्लैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज 0-4 से गंवाई थी। इससे पहले टीम आयरलैंड से भी सीरीज हार चुकी है। गिल बोले- विराट 2027 वर्ल्ड कप की योजना का हिस्सा-भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने मैच से पहले कहा कि विराट कोहली 2027 वनडे वर्ल्ड कप की योजनाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में विराट वे 5 साथ टीम कॉम्बिनेशन और भविष्य की रणनीति पर चर्चा हुई। गिल ने कहा कि रोहित और विराट का

हार्दिक की कमी-भारत की गेंदबाजी की कमान जसप्रीत

वनडे सीरीज हार चुकी है, जबकि पिछले साल चैंपियंस



बुमराह संभालेंगे। मोहम्मद सिराज टीम में नहीं हैं, जबकि हार्दिक पंड्या की गैरमौजूदगी में ऑलराउंडर की भूमिका के लिए शिवम दुबे और वॉशिंगटन सुंदर के बीच मुकाबला है। चोटिल हर्षित राणा की जगह प्रसिद्ध कुष्णा या गुरनूर बरार को मौका मिल सकता है। इंग्लैंड टी-20 की लय वनडे में भी बरकरार रखना चाहेगा- इंग्लैंड ने टी-20 सीरीज में भारत को 4-0 से हराया है। हालांकि पिछले डेढ़ साल में उसका वनडे रिकॉर्ड

ट्रॉफी में भी एक मैच नहीं जीत सकी थी। फिर भी घरेलू मैदान पर इंग्लैंड के लिए राहत की बात जो रूट की शानदार फॉर्म है। 2024 के बाद से उन्होंने वनडे में 65.93 की औसत से 1055 रन बनाए हैं। हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में उन्होंने 247 रन बनाए थे। रोहित और विराट पर रहेगी नजरें-इंग्लैंड दौरे पर रोहित शर्मा और विराट कोहली की आखिरी वनडे सीरीज हो सकती है। रोहित का इंग्लैंड में रिकॉर्ड

गिल (कप्तान), विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, अक्षर पटेल, केएल राहुल (विकेटकीपर), शिवम दुबे/वॉशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कुष्णा/गुरनूर बरार। इंग्लैंड ने मैच से एक दिन पहले अपनी फ्लेइंग-11 का ऐलान कर दिया है- बेन डकेट, जैकब बेथेल, जो रूट, हैरी ब्रूक (कप्तान), जोस बटलर (विकेटकीपर), सैम करन, विल जैक्स, जोफ्रा आर्चर, लियाम डॉसन, जोश टंग, आदिल रशीद।

## 20 साल बाद फुटबॉल वर्ल्डकप में फ्रांस बनाम स्पेन मुकाबला, पहला सेमीफाइनल डलास स्टेडियम में- 8 गोल कर चुके एम्बापे के सामने यमाल

डलास। फ्रांस और स्पेन 20 साल बाद फीफा वर्ल्ड कप में

थीं, जहां स्पेन ने 5-4 से जीत दर्ज की थी। उस मैच में यमाल

नोंवों को 4-1 से हराया। इसके बाद राउंड ऑफ 32 में टीम ने



आमने-सामने होंगे। दोनों टीमों के बीच 2026 वर्ल्ड कप का पहला सेमीफाइनल बुधवार देर रात 12:30 बजे डलास स्टेडियम में खेला जाएगा। वर्ल्ड कप में इससे पहले दोनों की आखिरी भिड़ंत 2006 में हुई थी, जब फ्रांस ने राउंड-16 में स्पेन को 3-1 से हराया था। ओवरऑल दोनों टीमों के बीच अब तक 38 मुकाबले हुए हैं, जिनमें स्पेन ने 18 और फ्रांस ने 13 मैच जीते, जबकि 7 मुकाबले ड्रा रहे। फ्रांस के कप्तान किलियन एम्बापे शानदार फॉर्म में हैं। वे मौजूदा वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा 8 गोल कर गोल्डन बूट की रेस में सबसे आगे हैं। दूसरी ओर स्पेन की उम्मीदें 19 साल के स्टार लामिन यमाल पर टिकी होंगी। यमाल ने पूरे टूर्नामेंट में कई बेहतरीन मौके बनाए हैं, हालांकि अब तक उनके नाम सिर्फ एक गोल है।

ने दो गोल किए थे। फ्रांस ने सभी मैच जीते-फ्रांस ने इस टूर्नामेंट

स्वीडन के खिलाफ 3-0 से जीत दर्ज की। फिर राउंड ऑफ 16 में



दोनों टीमों पिछली बार 2025 के नेशनल लीग सेमीफाइनल में भिड़ी

में अपने सभी 6 मुकाबले जीते

पैराग्वे को 1-0 से और क्वार्टर फाइनल में मोरक्को को 2-0 से हराया। अगर फ्रांस जीता तो- अगर फ्रांस यह मैच जीतता है, तो वह लगातार तीसरी बार वर्ल्ड कप फाइनल में पहुंचेगा। इससे पहले उसने 2018 का वर्ल्ड कप जीता था। 2022 में अर्जेंटीना से फाइनल में हार मिली थी। स्पेन टूर्नामेंट में अजेय-स्पेन टूर्नामेंट में अब तक कोई मैच नहीं हारा है। टीम ने 6 मैचों में 5 जीत और एक ड्रा खेला। ग्रुप स्टेज में स्पेन ने सऊदी अरब

ज्यादा 2 गोल किए हैं। दोनों टीमों की पॉसिबल स्टार्टिंग-11-फ्रांस: माइक मैन्मन, जुल्स कौंडे, उपामेकानो, विलियम सलीबा, थियो हर्नांडेज, चुआमेनी, एड्रियन रैंबियो, उस्मान डेम्बेले, एंटोनी ग्रीजमैन, बार्कोला, किलियन एम्बापे। स्पेन: डेविड राया, डेनी कार्वहाल, रॉबिन ले नॉर्मैंड, अयामेरिक लापोर्ट, मार्क कुकुरेला, रोड्री फेबियन रुइज, पेड्रि, लामिन यमाल, अल्वैरो मोराटा, निको विलियम्स।



## क्या कुछ करियर में ‘डीजे’ अकेलापन दूर करने का तरीका है?

हमारी कुक कमला शाह् महीने में कम-से-कम दस बार हमसे शिकायत करती हैं कि वे कभी भी रात 2 बजे से पहले नहीं सो पातीं। ऐसा तब है, जब

सिखाता है कि रोजमर्रा के काम में भी दो बिल्कुल अलग कॉन्सेप्ट को कैसे जोड़ा जाए।' उसने कहा कि दुनिया के कई बेहद अमीर आंत्रप्रेन्योर्स कुछ घंटों के लिए

के चीफ एक्जीक्यूटिव डेविड सोलोमन, बीबीसी के 'इंग्न्स डेन' शो के पैनलिस्ट स्टीवन बार्टलेट और 4 बिलियन डॉलर की एआई वीडियो क्रिएटर कंपनी

हैं। दिलचस्प यह है कि कुछ लोग 60 साल की उम्र में भी डीजेइंग शुरू करते हैं। जैसे, टीना वुड्स, जिन्हें डीजे टीना भी कहते हैं। उन्होंने ब्रिटेन में पब्लिक-प्राइवेट



वे रोज रात 8 बजे हमारे घर से चली जाती हैं और पांच मिनट के वॉकिंग डिस्टेंस पर ही रहती हैं। इसकी वजह उनका तीसरा अविवाहित बेटा सतीश है, जो नौकरी के बाद डिस्क जॉकी (डीजे) का काम भी करता है और होटल से रात 1.30 बजे लौटता है। कमला उसे खाना परोसने के बाद ही सो पाती हैं। पिछले महीने जब सतीश की शादी हुई, तो मैंने यूं ही उससे कहा कि चूँकि तुम्हारी शादी हो गई है तो अब डीजे का काम छोड़ सकते हो। लेकिन सतीश ने मुझे अलग नजरिया दिया। उसने बताया कि वह एक बड़ी फर्म के बैकएंड में काम करता है, जहां अकेलापन बहुत परेशान करता है। इसलिए डीजे पूरे दिन क्रिएटिव बने रहने में उसकी मदद करता है। उसने कहा कि 'डीजे म्यूजिक पूरी तरह जाने-पहचाने साउंड्स को नए संदर्भ में पेश करने पर आधारित होता है। कोई अनपेक्षित मैश-अप या चतुराई भरे ट्रांजिशन को सुनना आपके दिमाग को

डीजे का काम करते हैं, क्योंकि यह कई अहम तरीकों से आपकी कल्पनाशक्ति बढ़ाने के लिए ताकतवर उत्तेरक का कार्य करता है। घर लौटकर मैंने उन प्रमुख आंत्रप्रेन्योर्स की सर्च की, जो कॉग्निटिव क्रिएटिविटी बढ़ाने के लिए डीजे म्यूजिक इस्तेमाल करते हैं। जाहिर तौर पर डीजे सेट्स के साथ जुड़ने से उन खास न्यूरल पाथ-वे की एक्सरसाइज होती है, जो इनोवेटिव प्रॉब्लम सॉल्विंग, कॉग्निटिव फ्लेक्सिबिलिटी और इमोशनल एक्सप्रेशन से संबंधित होते हैं। ऑनलाइन जिस पहले व्यक्ति का नाम मुझे दिलचस्प लगा, वह लंदन की फेमिली लॉ फर्म 'साउथगेट सॉलिसिटर्स' के फाउंडर और मैनेजिंग डायरेक्टर हसन हादी थे। उन्होंने पिछले साल डीजेइंग शुरू की और पाया कि इससे न सिर्फ उनकी क्रिएटिविटी में फायदा हुआ, बल्कि वे काम पर फोकस भी कर पाते हैं। सतीश का भी यही दावा है। शौकिया डीजेइंग करने वाले फाउंडर्स में गोल्डमैन सैक

सिंथेसिस के को-फाउंडर और चीफ एक्जीक्यूटिव विक्टर रिपरबेर्ली शामिल हैं। शॉपिफाई के प्रेसिडेंट हार्लो फिंकेलेस्टीन ने किशोरावस्था में डीजे कंपनी शुरू की थी और आज भी अकसर अपनी कंपनी के कॉरपोरेट इवेंट्स में डीजेइंग करते हैं। रोजमर्रा में हादी अपनी लॉ फर्म का मैनेजमेंट, नेतृत्व और सुपरविजन संभालते हैं। हालांकि अब वे केसवर्क नहीं देखते, लेकिन युवा कानूनी पेशेवरों को कॉन्ट्रैक्ट दिलाने में मदद करते हैं। वे कहते हैं, 'दिन में लॉ फर्म मैनेज करना और फिर डीजेइंग करना, दोनों के लिए समान स्किल चाहिए।' वे सही भी हैं।

वकीलों और डीजे, दोनों को माहौल समझना पड़ता है, उसी स्थिति के अनुसार प्रतिक्रिया देनी पड़ती है। तात्कालिक परिस्थितियों से निपटना पड़ता है। चाहे अदालत में सुनवाई हो या क्लाइट के साथ बिजनेस मीटिंग, दोनों में ही मौके के अनुसार ही खुद को ढालना पड़ता

पार्टनरशिप के तहत हेल्थ इनोवेशन कंसल्टेंसी 'कोलाइडर हेल्थ' स्थापित की है। आज 62 की उम्र में टीना कहती हैं कि 'आंत्रप्रेन्योर होना बेहद अकेलेपन से भरा है और डीजे मुझे अपनी कंपनी के कॉरपोरेट इवेंट्स में डीजेइंग करने के लिए बहुत लंबी है, जो आज डीजेइंग कर रहे हैं या जिन्होंने कंपनी स्टार्ट करने से पहले डीजेइंग शुरू की थी। लेकिन यदि आप उनमें से हैं, जो दिनभर के कारोबार या हाई-प्रेसर जॉब के बाद घर जाकर सो जाते हैं और अगले दिन फिर वही शुरू करते हैं तो अगर आपको डीजेइंग असहज लगती है तो तनावमुक्त होने के लिए म्यूजिक का सहारा ले सकते हैं। फंडा यह है कि जीवन में या वर्कप्लेस पर अकेलेपन को मात देने के लिए आपको जरूर कोई तरीका खोजना चाहिए। किसी के साथ म्यूजिक सुनना भी एक थेरेपी है, जिसे आजमाया जा सकता है।एन. रघुरामन

### राजनीतिक दलों और नेताओं के रिश्तों में खींचतान का दौर

बीते कुछ समय में शिवसेना के 6, तृणमूल के 20 और आप के 7 लोकसभा-राज्यसभा सांसद दूसरी पार्टियों में शामिल हुए हैं।

पर निर्वाचित हुए हों, अगर वो उसे छोड़ते हैं, तो उनकी सदस्यता समाप्त हो जाएगी। इसका उद्देश्य स्पष्ट था-

राजनीतिक दल का किसी अन्य दल में विलय हो जाए और उसे सदन में उस दल के दो-तिहाई सांसदों या विधायकों का समर्थन



तीनों ही मामलों में संबंधित दलों ने इन विलयों का विरोध किया था। इसके बावजूद, दल-बदल विरोधी कानून के तहत ये वैध माने जाते हैं। इसके पीछे कौन-सा तकनीकी पेंच है? दल-बदल विरोधी कानून को तो एक वास्तविक समस्या से निपटने के लिए बनाया गया था। सांसद और विधायक बार-बार दल बदलकर दूसरी पार्टियों में शामिल हो जाते थे। हरियाणा के विधायक गया लाल ने तो एक ही दिन में तीन बार दल बदले थे। मंत्रिपद या अन्य लाभों के लालच में विधायकों को दल बदलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, जिससे निर्वाचित सरकारें अस्थिर हो जाती थीं। 1967-68 के दौरान ही विभिन्न विधानसभाओं में दल बदलने वाले 210 विधायकों में से 116 को मंत्री बना दिया गया था। इस पर रोक लगाने के लिए 1985 में संविधान की दसवीं अनुसूची जोड़ी गई। इसवेा तहत जनप्रतिनिधि जिस दल के टिकट

राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना और मतदाताओं के जनादेश की रक्षा करना। हालांकि, इस कानून ने राजनीतिक दलों और चुने हुए प्रतिनिधियों के सम्बंधों की प्रकृति भी बदल दी। दसवीं अनुसूची से पहले विधायकों और सांसदों के पास अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता थी। वे अपने विवेक, जनहित या अपने निर्वाचन क्षेत्र की आवश्यकताओं के आधार पर सदन में मतदान कर सकते थे। लेकिन दल-बदल कानून ने शक्ति-संतुलन राजनीतिक दलों के पक्ष में कर दिया। यदि कोई सांसद या विधायक पार्टी-व्हिप का उल्लंघन करता या पार्टी की सदस्यता छोड़ता, तो उसे डिसक्वालिफिकेशन का सामना करना पड़ सकता था। अर्थात् इस कानून के अंदर व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर दलगत अनुशासन को प्राथमिकता दी गई। परंतु कानून ने कुछ अपवाद भी स्वीकार किए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण था राजनीतिक दलों का विलय। इस प्रावधान के अनुसार, यदि किसी

प्राप्त हो, तो ऐसे निर्वाचित प्रतिनिधियों को अयोग्यता से संरक्षण मिलेगा। कानून की परिकल्पना यह थी कि विलय की प्रक्रिया में राजनीतिक दल और उसके निर्वाचित प्रतिनिधि-दोनों की भूमिका होगी। हालांकि समय के साथ न्यायालयों ने इस प्रावधान की ऐसी व्याख्या बनाई, जो दल-बदल कानून के व्यापक उद्देश्य से अलग दिखाई देती है। न्यायालयों ने दो-तिहाई बहुमत की शर्त को ही पर्याप्त मानना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप यदि किसी दल के पर्याप्त संख्या में सांसद या विधायक एक साथ किसी अन्य दल में जाने का निर्णय लेते हैं, तो दसवीं अनुसूची के उद्देश्य से उसे विलय मान लिया जाता है, भले ही मूल दल अस्तित्व में बना रहे और इसका विरोध करे। उदाहरण के लिए, आम आदमी पार्टी एक स्वतंत्र दल के रूप में मौजूद है, लेकिन उसके दस में से सात राज्यसभा सांसद अब भाजपा के साथ हैं। इसी प्रकार तृणमूल

आवश्यक संख्या पूरी हो जाती है, तो दल की औपनिर्णायक नहीं रहेगी। यह एक विचित्र विरोधाभास रचता है। इस तरह के विलयों के राजनीतिक परिणाम गंभीर होते हैं। वे सदन में बहुमत का संतुलन बदल सकते हैं, महत्वपूर्ण विधेयकों पर मतदान को प्रभावित कर सकते हैं और सरकारों की स्थिरता को भी संकट में डाल सकते हैं। यह समस्या छोटे राज्यों और क्षेत्रीय दलों के लिए अधिक गंभीर है, जहां विधायकों की संख्या सीमित होती है। छोटी विधानसभाओं में दो-तिहाई का आंकड़ा पाना आसान होता है। लोकतंत्र में राजनीतिक दलों को महत्वपूर्ण माना गया था। इसीलिए यदि कोई सांसद या विधायक अपने दल के विरुद्ध जाता, तो अपनी सदस्यता खो सकता था। किंतु दल-विलय के प्रश्न में राजनीतिक दल की इच्छा को लगभग अप्रासंगिक बना दिया गया है। (ये लेखकों के अपने विचार हैं, अर्घ्य सेनगुप्ता और स्वप्निल त्रिपाठी)

### चीन के विस्तारवादी मंसूबे अब हर्दें पार करने लगे हैं

विगत 2 जुलाई को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय के बाहर निर्वासित तिब्बती कार्यकर्ता लोबगा रंगजेन द्वारा आत्मदाह

विस्तार दिया है। लेकिन शी जिनपिंग के लिए तिब्बत पर भौतिक नियंत्रण ही पर्याप्त नहीं। वे पुरे तिब्बती पठार पर पूर्ण और

बच्चे इन स्कूलों में पढ़ते हैं। उन्हें साल के अधिकांश समय अपने परिवारों और संस्कृति से अलग रखा जाता है, मंदारिन

लिया है। पेरिस के एक संप्रहालया ने तिब्बत की कलाकृतियों को शिजांग से आई हुई के रूप में लेबल किया है।



कर लेना किसी व्यक्तिगत निराशा की अभिव्यक्ति नहीं थी। यह हमारे समय के सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुद्दों में से एक-तिब्बत को नष्ट किए जाने के प्रति दुनिया की बढ़ती उदासीनता को झकझोरने का एक हतयास प्रयास था। पीपुल्स रिपब्लिक की स्थापना के तुरंत बाद चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया था। इसे अकसर मानवाधिकारों के परिपेक्ष्य से देखा जाता है, और इसके ठोस कारण भी हैं। लेकिन इसे एशिया की सबसे मूल्यवान भू-राजनीतिक संपत्तियों में से एक पर दावा जताने के प्रयास के रूप में भी समझा जाना चाहिए। विशाल और संसाधनों से समृद्ध तिब्बती पठार हिमालय की गोद में बसा है। इसमें एशिया की महान नदियों का उद्गम स्थल है। और यह दक्षिण, मध्य और दक्षिण पूर्व एशिया के परिपेक्ष्य से सामरिक महत्व का स्थान है। हाल के दशकों में, चीन ने तिब्बत में भारी निवेश किया है। वहां पर व्यापक सैन्य बुनियादी ढांचे और विशाल बांधों का निर्माण किया है और रणनीतिक महत्व के खनिजों के खनन को भी

स्थायी नियंत्रण चाहते हैं। शी ने निष्कर्ष निकाला है कि इसे हासिल करने का सबसे अच्छा तरीका वहां के लोगों की पहचान को मिटा देना है। तिब्बती लोग एक विशिष्ट जातीय समूह हैं, जिनकी अपनी भाषा, परंपराएं, भोजन और पोशाक हैं। तिब्बतियों से उनकी पहचान छीनना और यह सुनिश्चित करना कि वे अब खुद को तिब्बती न मानें- इसका एक ही लक्ष्य है : 'विश्व की छत' पर स्थायी चीनी शासन केा विरुद्ध तमाम प्रतिरोधों को खत्म करना। अपने इसी मकसद को पूरा करने के लिए चीन ने सरकारी छात्रावासों की प्रणाली का विस्तार किया है और तिब्बती बच्चों को कम उम्र में ही वहां भेजना शुरू कर दिया है। चीन इन आवासीय स्कूलों को विकास के इंजन बताता है। जबकि हकीकत यह है कि इनका पाठ्यक्रम बच्चों की तिब्बती पहचान को मिटाने और उसकी जगह चीन के प्रति निष्ठा पैदा करने के लिए बनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों की रिपोर्ट है कि 6-18 वर्ष की आयु के दस लाख से अधिक तिब्बती

भाषा में पढ़ाया जाता है, हान संस्कृति के संपर्क में लाया जाता है और उन्हें अपनी ही संस्कृति, धर्म और भाषा को हीन समझने के लिए तैयार किया जाता है। दूसरे शब्दों में, चीन तिब्बतियों की ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहा है, जो चीन में घुल-मिल जाए और अपनी संस्कृति भुला दे। तिब्बत को मिटाने के लिए चीन ने अन्य कदम भी उठाए हैं। 2023 के अंत से, चीन ने अपने सरकारी दस्तावेजों, राजनयिक संचार और मीडिया में तिब्बत के आधिकारिक नाम को बदलकर शिजांग कर दिया है। यह नाम तिब्बत के लिए मंचू किंग राजवंश की शब्दावली से लिया गया है। इसे अपनाना इस बात पर जोर देने के लिए है कि तिब्बत एक अलग ऐतिहासिक इकाई नहीं है, बल्कि चीन का एक अंग ही है। देखें तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने भी इन प्रयासों में मदद की की है। चीन के बाहर कुछ संप्रहालयों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों ने इस साम्राज्यवादी नाम-परिवर्तन को स्वीकार कर



तकनीक भरोसे को बचा पाएगी? और फिर आईदा लीक की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी? शायद हां, शायद नहीं। नीट परीक्षा को लेकर अभी भी कितने पेरेंट्स और परीक्षार्थी संशय की स्थिति में होंगे। नागरिकों के लिए यह जानना आसान नहीं होता है कि सरकार में उनके प्रतिनिधि क्या कर रहे हैं, हालांकि वे उनके काम-काज पर नजर बनाए रखते हैं। चुने हुए जनप्रतिनिधियों को तो वोट की मदद से पद से हटाया जा सकता है, लेकिन सरकारी कर्मचारी या सिविल सर्वेंट्स चुने हुए नहीं होते और इस तरह के नियंत्रण से सुरक्षित रहते हैं। तब नागरिकों को सरकारी एजेंसियों और उनके कर्मचारियों पर भरोसा रखना पड़ता है कि

और इसी वजह से व्यक्ति खुद को हमेशा अलग-थलग समझने लगता है, जबकि चारों ओर खामियां ही खामियां हैं। तो क्यों नहीं इस सिस्टम को समझा जाए और यह भी खंगाला जाए कि इस सिस्टम को और सुदृढ़ कैसे किया जा सकता है? इस संबंध में यह तर्क रहा है कि सरकारी अधिकारियों की सही भूमिका संरक्षक की होनी चाहिए, यानी एक प्रभावी और नैतिक प्रतिनिधि के तौर पर काम करके जनता का भरोसा जीतने की प्रशासक की इच्छा और उसकी क्षमता से लैस व्यक्तित्व। सिस्टम पर भरोसे को बचाए रखने के लिए सिर्फ एक कुशल और पेशेवर सिविल सर्वेंट होना ही नहीं काफी है, बल्कि न्याय

ही उस भरोसे को बनाए रख पाता है, जो लोकतंत्र का आधार है।

तो क्या 21 जून को होने वाली नीट और अन्य परीक्षाएं त्रुटिरहित हो पाएंगी और किसी भी तरह के लीक से सुरक्षित रहेंगी? क्या सिस्टम भरोसे को कायम रख पाएगा? क्या भविष्य की कम्प्यूटराइज्ड परीक्षा सिस्टम से बाहर निकाल सके। नीट की कम्प्यूटराइज्ड माध्यम से होने वाली परीक्षा और यूपीएससी की पीटी परीक्षा में नैतिक प्रक्रिया से जुड़े प्रश्न उस भरोसे को निःसंदेह मजबूत बनाएंगे।

नैतिकता का लोकेशन परिधि में नहीं बल्कि केंद्र में होता है और सिस्टम इसी के गुरुत्व से चलता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं, नंदितेश निलय)

तो भरोसा एक बिल्कुल ही पारदर्शी रंग में नजर आएगा। सिस्टम में भरोसे को फिर से स्थापित करने के लिए तकनीक का तो सहारा लेना ही पड़ेगा, साथ ही व्यवस्था को चलाने वाले नायकों को भी उस ईमानदारी या सत्यनिष्ठा को अपनाना होगा, जिससे वे खुद को नैतिक दुविधा से बाहर निकाल सकें। नीट की कम्प्यूटराइज्ड माध्यम से होने वाली परीक्षा और यूपीएससी की पीटी परीक्षा में नैतिक प्रक्रिया से जुड़े प्रश्न उस भरोसे को निःसंदेह मजबूत बनाएंगे।

नैतिकता का लोकेशन परिधि में नहीं बल्कि केंद्र में होता है और सिस्टम इसी के गुरुत्व से चलता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं, नंदितेश निलय)



जगन्नाथ रथ यात्रा देखने जा रहे हैं-ये 10 तैयारियां करें, सुरक्षित दर्शन के 7 नियम, भीड़ में सेफ्टी के 12 गोल्डन रूल

पुरी। 16 जुलाई से भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा शुरू हो रही है, जो 24 जुलाई तक चलेगी। यह आस्था के सबसे बड़े उत्सवों में से एक है। हर साल लाखों श्रद्धालु इसमें शामिल होते हैं। लेकिन भारी भीड़, लंबा पैदल सफर और बदलता मौसम इस यात्रा को चुनौतीपूर्ण भी बना सकते हैं। अगर आप पहली बार रथ यात्रा में जा रहे हैं तो कुछ जरूरी तैयारियां और सुरक्षा नियम पढ़ लेने बेहद जरूरी हैं। आखिर यात्रा पर निकलने से पहले क्या तैयारी करें, भीड़ में खुद और परिवार को कैसे सुरक्षित रखें, क्या साथ ले जाएं और किन गलतियों से बचें? इन सभी सवालों के जवाब यहां जानिए। भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है। हर साल लाखों श्रद्धालु इस महापर्व का हिस्सा बनने पूरी पहचान लेते हैं। लेकिन भारी भीड़, लंबा पैदल सफर और बदलता मौसम इस यात्रा को चुनौतीपूर्ण भी बना सकते हैं। अगर आप पहली बार रथ यात्रा में जा रहे हैं तो पहले से कुछ जरूरी तैयारियां करना और सुरक्षा नियम जानना बेहद जरूरी है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में हम बात करेगे यात्रा से जुड़ी तैयारियों की। साथ ही जानेगे कि-भीड़ में खुद को और परिवार को कैसे सुरक्षित रखें? कौन-सा सामान साथ ले जाएं? किन गलतियों से हर हाल में बचें? सवाल- अगर पहली बार रथ यात्रा देखने जा रहे हैं तो सबसे पहले क्या तैयारी करें? जवाब- घर से निकलने से पहले यही तैयारियां जरूरी हैं-रथ यात्रा का रूट और समय पहले से जान लें। प्रशासन की ट्रैफिक और सुरक्षा एवाइजरी पढ़ लें। होटल और आने-जाने की बुकिंग पहले कर लें। मौसम का हाल देखकर रेनकोट या छाता साथ रखें। मोबाइल पूरी तरह चार्ज करें और पावर बैंक साथ रखें। परिवार या दोस्तों के साथ जा रहे हैं तो मिलने की एक जगह पहले से तय कर लें। मोबाइल में ऑफलाइन मैप, होटल का पता और जरूरी नंबर सेव कर लें। पहचान-पत्र, जरूरी दवाइयां, पानी की बोतल और थोड़ा ओआरएस साथ रखें। भीड़ और सुरक्षा से जुड़े स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन करें। यात्रा से पहले 10 जरूरी तैयारियां:- मौसम की जानकारी लें। आसामदायक कपड़े पहनें। पहचान-पत्र साथ रखें। मोबाइल फुल चार्ज रखें। पावर बैंक साथ रखें। पानी की बोतल रखें। जरूरी दवाएं साथ रखें। नकदी सामान सुरक्षित रखें। फैमिली मिटिंग पॉइंट तय करें प्रशासन की एवाइजरी पढ़ें। सवाल- क्या रथ यात्रा में हर कोई शामिल हो सकता है? जवाब- हां, रथ यात्रा में आमतौर पर हर श्रद्धालु शामिल हो सकता है। हालांकि, वहां भारी भीड़ होती है और लंबा पैदल चलना पड़ सकता है। ऐसे में बुजुर्ग, छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों को अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। सवाल- रथ यात्रा देखने का सबसे सुरक्षित तरीका क्या है? जवाब- रथ यात्रा के दौरान सबसे जरूरी है कि आप प्रशासन के निर्देशों का पालन करें और

जाते हैं। इन्हें पार करने से हादसे और भगदड़ का खतरा बढ़ सकता है। 4. भीड़ के बीच क्यों न घुसे? भीड़ में धक्का-मुक्की, दम घुटने, गिरने या बिछड़ने का जोखिम बढ़ जाता है। इसलिए सुरक्षित दूरी बनाएं। सुरक्षित दश के नियम- बैरिकेड के पीछे ही रहें भीड़ में धक्का-मुक्की न करें। रथ के बहुत करीब न जाएं। पुलिस और स्वयंसेवकों से निर्देश मानें। बच्चों का हाथ न छोड़ें। सेल्फी के लिए रास्ता न रोकें। अफवाह या भगदड़ जैसी स्थिति में शांत रहें। सवाल- क्या रथ को छूना जरूरी होता है? जवाब- नहीं। रथ यात्रा में भागना के दर्शन करना ही सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। रथ को छूना किसी श्रद्धालु के लिए अनिवार्य नहीं है। भीड़ में सिर्फ रथ को छूने के लिए आगे बढ़ना या धक्का-मुक्की करना खतरनाक हो सकता है। सवाल- अगर बहुत ज्यादा भीड़ हो जाए तो क्या करें? जवाब- अगर अचानक भीड़ बढ़ जाए तो घबराएं नहीं। धक्का देने या भीड़ के खिलाफ चलने की कोशिश न करें। पुलिस / स्वयंसेवकों से मदद लें। रौककर फोटो न खींचें। सवाल- कौन-कौन सी चीजें सवाल ले जानी चाहिए? जवाब- रथ यात्रा में लंबा इंतजार, पैदल चलना और भीड़ का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए सिर्फ जरूरी और हल्का सामान ही साथ रखें। पहचान पत्र, पानी की बोतल, ओआरएस, नियमित दवाइयां,

पहनकर जाना सबसे बेहतर रहेगा? जवाब- रथ यात्रा में भीड़ होती है, मौसम खराब हो सकता है और कई घंटे पैदल चलना पड़ सकता है। इसलिए आरामदायक कपड़े और जूते पहनें। सवाल- बच्चों के साथ जा रहे हैं तो क्या सावधानी



बरतें? जवाब- रथ यात्रा में भीड़ के कारण बच्चों के बिछड़ने का खतरा अधिक रहता है। इसलिए उन्हें कभी अकेला न छोड़ें और सुरक्षा के इन 7 नियमों का ध्यान रखें-बच्चों का हाथ

में जाने से बचें। नियमित दवाइयां साथ रखें। पानी और ओआरएस पीते रहें। थकान होने पर बीच-बीच में आराम करें। आरामदायक जूते पहनें। तबीयत बिगड़े तो तुरंत मेडिकल कैंप जाएं। यदि हृदय, सांस या अन्य गंभीर बीमारी है, तो डॉक्टर की सलाह

सवाल- अगर बारिश हो जाए तो क्या करें? जवाब- पॉइंटर्स से समझें- घबराएं नहीं, किसी सुरक्षित जगह पर रुकने की कोशिश करें। फिसलन वाले रास्तों पर धीरे चलें और भीड़ में धक्का-मुक्की से बचें। छाता या हल्का रेनकोट साथ रखें, लेकिन



बरतें? जवाब- रथ यात्रा में भीड़ के कारण बच्चों के बिछड़ने का खतरा अधिक रहता है। इसलिए उन्हें कभी अकेला न छोड़ें और सुरक्षा के इन 7 नियमों का ध्यान रखें-बच्चे का हाथ

लेकर ही यात्रा करें। सवाल-अगर कोई बिछड़ जाए तो क्या करें? जवाब- नीचे दिए पॉइंट्स से समझें- घबराने की बजाय शांत रहें और सोच-समझकर कदम उठाएं। परिवार के साथ पहले से तय किए गए मीटिंग पॉइंट पर पहुंचें और कुछ समय वहीं इंतजार करें। तुरंत नजदीक पुलिस सहायता केंद्र, हेल्प डेस्क या स्वयंसेवकों को पूरी जानकारी दें। अगर मोबाइल नंबर के काम नहीं कर रहा है, तो पब्लिक अनाउंसमेंट करवाएं। बच्चों, बुजुर्गों या किसी अन्य सदस्य को अकेले खोजने के लिए भीड़ में न भेजें। उसी बच्चा बिछड़ गया है, तो उसके पहचान, कपड़ों का रंग और अन्य जरूरी जानकारी तुरंत पुलिस को बताएं। व्यक्ति के मिलने तक पुलिस और प्रशासन के निर्देशों का पालन करें और अफवाहों पर भरोसा न करें। सवाल- क्या भीड़ में मोबाइल टैग कर काम करना बंद कर सकता है? ऐसा हो जाए तो क्या करें? जवाब- नीचे दिए पॉइंट्स से समझें- भीड़ बढ़ने पर मोबाइल टैग करके धीमा लिफ सकता है या कुछ समय के लिए काम करना बंद कर सकता है। यात्रा पर निकलने से पहले परिवार के सभी सदस्यों के साथ एक मीटिंग पॉइंट और मिलने का समय तय करें। जरूरी फोन नंबर एक कागज पर लिखकर अपने पास रखें, ताकि मोबाइल बंद होने पर भी काम आ सके। अगर कॉल न लग रही हो, तो एसएमएस या इमरजेंट मैसेजिंग ऐप से संदेश भेजने की कोशिश करें। कई बार ये पहले काम करने लगते हैं। नेटवर्क न मिलने पर पुलिस सहायता केंद्र, हेल्प डेस्क या स्वयंसेवकों से संपर्क करें। घबराकर भीड़ में इधर-उधर न भागें। सुरक्षित स्थान पर रहें और प्रशासन के निर्देशों का पालन करें। सवाल-

भीड़ में बड़ा छाता खोलने से बचें। इससे दूसरों को परेशानी हो सकती है। मोबाइल, पहचान पत्र और जरूरी दस्तावेजों को वाटरप्रूफ पाउच में रखें। जगह-बगल वाले रास्तों से बचें और प्रशासन द्वारा तय किए गए सुरक्षित मार्ग का ही इस्तेमाल करें। बिजली के खंभों, खुले तारों या पानी भरे इलाकों के पास जाने से बचें। मौसम खराब होने पर पुलिस और प्रशासन की ओर से जारी निर्देशों का पालन करें। सवाल- यात्रा के दौरान खाने-पीने से जुड़ी कूड़ा सवधानी बरतें? जवाब- पॉइंटर्स में देखें-लेबल साफ-सुथरी और भरोसेमंद जगह से ही खाना-पीना लें। सोलब बोल या सुरक्षित पेयजल ही पिएं और पर्याप्त पानी पीते रहें। खुले में रखे कटे फल, बासी या लंबे समय से खुले खाद्य पदार्थ न खाएं। बहुत ज्यादा तला-भुना या भारी भोजन न करें। जरूरी दवाएं साथ रखें और समय पर लेते रहें। बच्चों और बुजुर्गों को समय-समय पर पानी और हल्का नाश्ता दें। खाने से पहले हाथ धोएं या हैंड सैनिटाइजर यूज करें। सवाल- अगर किसी की तबीयत अचानक बिगड़ जाए तो क्या करें? जवाब- पॉइंटर्स में देखें- घबराएं नहीं और मरीज को भीड़ से सुरक्षित जगह पर ले जाएं। तुरंत नजदीकी मेडिकल केंद्र, एम्बुलेंस या हेल्प डेस्क को सूचना दें। मरीज को आराम से बिठाएं या लिटाएं और खुली हवा मिलने दें। बेहोश व्यक्ति को कुछ भी खाने-पीने के लिए न दें। अगर मरीज निपटारा देना लेता है, तो उसकी दवा और मेडिकल जानकारी साथ रखें। हालत गंभीर हो, तो बिना देर किए स्वास्थ्य कर्मियों की मदद लें। सवाल- फोटो-वीडियो बनाते समय किन बातों का ध्यान रखें? जवाब- इन बातों का ध्यान रखें- सेल्फी के लिए भीड़ में न रुकें। रथ या बैरिकेड के बहुत करीब न जाएं। ऊंची जगह पर चढ़कर फोटो न लें। चलते-चलते भीड़ में फोटो न खींचें। मोबाइल और अन्य सामान से भालकर बचें। पुलिस और सुरक्षा कर्मियों

वंदे मातरम् हाड़े की तरह रट रहे मुस्लिम  
बच्चे, बंगाल के मदरसों में गाने का आदेश

कोलकाता। मोहम्मद खसरु  
जवाब देते हैं, 'अभी बच्चे गीत  
सीख रहे हैं। पूरा गाना मुमकिन  
नहीं है, इसलिए नहीं गा रहे हैं।'

उम्मीद है एक-दो महीने में बच्चे गाना सीख जाएंगे।' जगह: सैयद नजरुल इस्लाम जूनियर हाई मदरसा, आसनसोल सैयद

सकते हैं। स्टाफ ने जवाब दिया, बच्चे असेंबली में गाते हैं, अलग से गवाकर क्या दिखाना। जगह: प्राइमरी-जूनियर हाई स्कूल,



ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और जमीयत उलेमा-ए-हिंद जैसे मुस्लिम संगठन वंदे मातरम् गाने का विरोध करते हैं, लेकिन 12वीं में पढ़ने वाली सभी यासीम को इससे गुजरने जाना है। वे कहती हैं: 'मैंने कई बार ये गीत सुना है, लेकिन मद्रस में इसे गाते नहीं थे। इसमें परेशानी जैसा कुछ नहीं है। पहले जन-गण-मन गा रहे थे, अब वंदे मातरम् भी गाएंगे। बस इसे सीखने में टाइम लगेगा।' जगज्ज रहमानिया हायर सेकेंडरी स्कूल, आसमाल-ए-पश्चिम बंगाल बोर्ड ऑफ हायर सेकेंडरी एजुकेशन बोर्ड के उर्दू मीडियम स्कूल भी है। ज्यादातर मुस्लिम आबादी वाले इलाकों में हैं। इनमें से एक रहमानिया हाई स्कूल आसमाल-से रेंगेपार एरिया में है। यहां नर्सरी से 12वीं तक की पढ़ाई होती है। हम स्कूल पहुंचे, तब सुबह की प्रार्थना हो रही थी। पहले अल्लामा इकबाल का उर्दू में लिखा 'लरने पे आती है दुआ' बरकत तममा मेरी' गीत गाया गया और फिर जन-गण-मन। आखिर में स्कूल के एक टीचर ने बच्चों से कहा कि अब राष्ट्रगीत वंदे मातरम् बजाया जाएगा, आप सभी को सावधानी की मुद्रा में इसे सुनना है। टीचर जेब से मोबाइल निकालते हैं। यू-ट्यूब पर वंदे मातरम् सर्फ करते हैं। गीत बजते ही फोन स्पीकर के सामने रख देते हैं। बच्चे उसे ध्यान से सुनने लगे। हमने स्कूल के सीनियर असिस्टेंट बख्तियार आलम से पूछा, आदेश तो वंदे मातरम् गाने का है, फिर फोन से क्यों सुना रहे हैं? वे कहते हैं, बच्चों के लिए याना तराना फौरन गा पाना थोड़ा मुश्किल है। हमारे यहां उर्दू में पढ़ाई होती है। बच्चे हिंदी और बांग्ला बिस्कुल नहीं जानते। वंदे मातरम् संस्कृत में हैं। इसलिए छोटे बच्चों को परेशानी हो रही है। इसके शब्द भी मुश्किल हैं। हाई स्कूल के स्टूडेंट्स ने उर्दू में तराना लिखकर दिया है, लेकिन बच्चों को बोलने में दिक्कत आ रही है।' आपने इस परेशानी से लिए कहीं कियायत की? बख्तियार जवाब देते हैं, 'सरकार का आदेश है, तो मानना पड़ेगा। हम बच्चों को पहाड़े की तरह एक-दो लाइन याद करवा रहे हैं। फिलहाल स्टीयर पर गाना सुनाया जा रहा है।

नजरूल इस्लाम जूनियर हाई मंदरसा की हालत बहुत अच्छी नहीं है। बच्चों के लीहाजे से क्लास रूम कम है। एक हॉल को दो हिस्सों में बांटकर क्लास लगाई जाती है। सुबह की प्रार्थना के लिए भी जगह नहीं है। बच्चे क्लास से ही प्रार्थना में शामिल होते हैं। यहां माइक और स्पीकर खराब हैं, इसलिए मोबाइल पर ही वंदे मातरम् सुनाया जाता है। मोबाइल की आवाज जहां तक जाती है, वहीं तक के बच्चे इस सुन पाते हैं। टीचर सैयद कबीरुल्लाह अहमद स्कूल में सुविधाओं की कमी से नाराज हैं। वे कहते हैं, '2011 में यहां 200 स्टूडेंट, 6 टीचर, एक हेडमास्टर और एक प्यून थे। अब करीब एक हजार स्टूडेंट हो गए, लेकिन टीचर्स उतने ही हैं।' क्लास की हालत देखकर लगा कबीरुल्लाह की शिकायत सही है। स्कूल में लाइट नहीं थी। तेज गर्मी में लड़कियां कॉपी से हवा कर रही थीं। स्कूल में स्टॉफ रूम के नाम पर एक झोपड़ी नुमा कमरा है। इसमें एक पुराना पंखा, अलमारी और कुर्सी टैलर है। छत भी टूटी हुई है। इसे फास्टिक से बंद किया गया है। टीचर्स यहां सिर्फ रजिस्टर में हाजिरी लाने आते हैं, इसके बाद क्लास में ही रहते हैं। जगह: सोदपुर कॉलोनियर हाईस्कूल, आसनसोल-२: आखिर में हम हिंदी-बांग्ला मीडियम स्कूलों में गए। यहां चुनौती पश्चिम बर्धवान जिले का आसनसोल और दुर्गापुर। आसनसोल के सोदपुर कॉलोनियर हाईस्कूल में हिंदी और बांग्ला दोनों में पढ़ाई होती है। यह स्कूल 5वीं से 12वीं तक है। यहां भी स्पीकर पर वंदे मातरम् बजाया गया, लेकिन बच्चे भी इस गीत को गा रहे थे। कुछ बच्चे जरूर राष्ट्रगीत गाने में असहज थे। स्कूल की टीचर इन चार्ज थावणी गोस्वामी कहती हैं, 'उप्यादातर बच्चों को राष्ट्रीय गीत के दो पैराग्राफ याद हैं। गीत के शब्द बहुत कठिन हैं। हमने इसे क्लास के वॉट्सएप ग्रुप में भेजा है ताकि शब्द पढ़कर आसानी से याद कर सकें। गीत पश्चिम बंगाल में लिखा गया। यहां के लोग इस गीत को भूलें नहीं थे। सरकारों आदेश के बाद से ये प्रैक्टिस में आ गया है।' हमने कहा कि किसी बच्चे से वंदे मातरम् गवाकर सुनें

झांझरा, दुर्गापुर- आखिर मैं हम  
झांझरा के प्राइमरी-जूनियर हाई  
स्कूल पहुंचे। यहां हिंदी और  
बांग्ला मीडियम में पढ़ाई होती  
है। स्कूल में एक तरफ प्री  
प्राइमरी और दूसरी तरफ एक  
कमरे में जूनियर हाई सेक्शन  
है। इसमें एक ही क्लास में छठवीं  
से आठवीं की क्लास चलती है।  
हम यहां पहुंचे तब, एक कमरे  
में तीनों क्लास के बच्चे थे।  
इस बारे में जूनियर हाई स्कूल  
के हेड मास्टर मनोज कुमार मंडल  
से बात की। वे कहते हैं, 'अभी  
2019 में शुरू हुआ था। स्कूल  
एक कमरे में दो टीचर बच्चों को  
एडजस्ट करके पढ़ा रहे हैं। कई  
बार काम टीचर होने की  
शिकायत की है, लेकिन फायदा  
नहीं हुआ। एक टीचर को बच्चों  
में वंदे मातरम् सिखाने की  
जिम्मेदारी दी है। वे कहती हैं,  
अभी तो टीचर्स को ही इसे गाना  
में दिक्कत होती है। इसलिए हमने  
बच्चों को गीत लिखकर दिया है  
और कठिन शब्द याद करवा रहे  
हैं।' धर्मगुरु बोले- वंदे मातरम्  
ही क्यों, 'सारे जहां से अच्छा'  
भी तो गा सकते हैं।' ऑल इंडिया  
इमाम ऑर्गनाइजेशन के प्रदेश  
वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन के प्रदेश  
अध्यक्ष मोलाना मोहम्मद  
शाकिफ कासमी सरकार के  
फैसले से खुश नहीं हैं। वे कहते  
हैं, 'वंदे मातरम् गाने से  
मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं  
को मसला होता है। इसकी जगह  
पर कोई और गाना भी हो सकता  
है। जन-जन मन और सारे जहां  
से अच्छा, मैं से कोई भी एक  
गाना रख सकते हैं।' उर्दू स्कूल  
में मुसलमानों में स्पीकर पर वंदे  
मातरम् सुनाए जाने और याद  
कराने के बारे में पूछने पर वे  
कहते हैं, 'स्पीकर पर बजाने से  
धार्मिक भावनाएं आहत नहीं  
होती हैं। जिन्हें अच्छा लग रहा  
है, वे कर रहे हैं। इसमें कोई  
परेशानी की बात नहीं है।' वंदे  
मातरम् पर क्यों है विवाद-  
मुस्लिम धर्मगुरुओं को वंदे  
मातरम् के तीसरे, चौथे, पांचवें  
और छठवें छंद पर आपत्ति है।  
क्योंकि इसमें मातृभूमि को देवी,  
दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती कहा  
गया है। आजादी की लड़ाई के  
वक्त मुस्लिम लोग ने भी इसे गैर-  
इस्लामिक बताया था। सिंधिगान  
सभ ने 24 जनवरी, 1950 को  
वंदे मातरम् के शुरुआती दो छंदों  
को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया था।

**ये जरूरी सामान  
साथ रखें**



मोबाइल और पावर बैंक, रेनकोट या छोटा छाता डिजिटल पेमेंट की सुविधा, नकद पैसा, हल्का नाश्ता। सवाल- कौन-कौन सी चीजें साथ नहीं ले जानी चाहिए?

पकड़कर रखें। भीड़ में अकेला न छोड़ें। उसे चमकीले कपड़े पहनाएं। जेब में नाम, मोबाइल नंबर की पर्ची रखें। पहले से मिलने की जगह तय करें। बच्चे

से कैसे बचें? जवाब- इसके लिए ये जरूरी सावधानियां बरतें- ज्यादा नकदी लेकर या महंगे गहने पहनकर न जाएं। मोबाइल, पर्स और अन्य कीमती सामान



भीड़ में धक्का-मुक्की से बचें  
अन्य जरूरी बातें पॉइंटर्स में  
देखें-1. कहां खड़े हों? प्रशासन  
द्वारा तय किए गए बैरिकेड, दर्शक  
क्षेत्र या सुरक्षित स्थान पर ही  
खड़े होकर दर्शन करें।2. कहां  
बिल्कुल न जाएं? रथ के बिल्कुल  
पास, रस्सी खींचने वाले मार्ग  
और प्रतिबंधित क्षेत्रों में न जाएं।  
3. बैरिकेड क्यों पार न करें?  
बैरिकेड सुरक्षा के लिए लगाए

जवाब- रथ यात्रा में भीड़ अधिक होती है। इसलिए ऐसा सामान साथ न रखें, जिससे चलने-फिरने में परेशानी हो या सूटका जोखिम बढ़े। ये सामान साथ न ले जाएं- भारी बैग या सूटकेस, कीमती गहने, बड़ी रकम, गैरजरूरी इलेक्ट्रॉनिक्स, चलनशील वस्तुएं, कांच की बोतलें, नुकीली चीजें, जरूरत से ज्यादा सामान। सवाल- क्या

को खिला-पिलाकर ले जाएं। सिखाएं कि बिछड़ने पर पुलिस की मदद लें। सवाल- साथ में बुजुर्ग हों तो किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- बुजुर्गों के लिए रथ यात्रा की भीड़ और लंबी पैदल दूरी थकाने वाली हो सकती है। इसलिए उनकी सेहत और सुविधा का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। डिटेल्स पॉइंट्स में देखें- भीड़ वाले हिस्से

ज्यादा करीब आने पर सतर्क हो जाएं। मोबाइल को हाथ में लहराने या बार-बार निकालने से बचें। अपने सामान की समय-समय पर जांच कराने रहें। किसी अजनबी को अपना बैग या सामान संभालने के लिए न दें। यदि जेब कटने या चोरी होने का पता चले, तो तुरंत नजदीकी पुलिस सहायता को सूचना हेल्प डेस्क पर इसकी सूचना दें।

उत्साह का महापर्व है। ऐसे में दर्शन की खुशी तभी पूरी होगी, जब आपकी यात्रा सुरक्षित भी रहे। यात्रा का उद्देश्य सिर्फ रथ के करीब पहुंचना नहीं, बल्कि श्रद्धा के साथ भगवान के दर्शन करना है। इसलिए धैर्य रखें, अनुशासन बनाए रखें और अपनी व दूसरों की सुरक्षा का ध्यान रखें। सुरक्षित यात्रा ही सबसे सफल यात्रा है।

ट्रम्प के चहेते लिंडसे ग्राहम की यूक्रेन से लौटते ही मौत, क्या रूस ने जहर दिया, भारत पर 500फीसदी टैरिफ के लिए उकसाते थे

वाशिंगटन। राष्ट्रपति ट्रम्प के बेहद करीबी सीनेटर लिंडसे ग्राहम 11 जुलाई को यूक्रेन दौरे से अमेरिका लौटते, ट्रम्प से फोन पर बात की और सोने चले गए। कुछ

लौटे। यूकेन जाने से पहले ग्राहम स्वस्थ दिख रहे थे, लेकिन 12 जुलाई की रात ही उनकी मौत हो गई। उनके ऑफिस ने बताया कि मौत बीमारी की वजह से हुई।

लग रही थी। हालांकि वह थोड़े  
थके हुए लग रहे थे। ग्राहम की  
मौत को लेकर अमेरिकी अखबारों  
और न्यूज आउटलेट्स में खबरें  
चल रही हैं कि इसके पीछे कहीं



सवाल उठ रहे हैं कि कहीं जहर देकर तो नहीं मारा गया। मौत वैमारी से हुई या कोई बड़ी साजिश। सवाल ये उठता है कि लिंडसे ग्राहम की मौत की वजह क्या है? जवाब: 71 साल के लिंडसे ग्राहम राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बेहद करीबियों में से एक थे। साउथ कैरोलिना सीट से ऊपरी सदन 'सीनेट' के सदस्य भी थे। 10 जुलाई से वे यूक्रेन दौरे पर थे। 11 जुलाई को अमेरिका

पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक दिल की धमनी फटने से ग्राहम की मौत हो गई। फिलहाल ग्राहम का डेथ सर्टिफिकेट जारी नहीं हुआ है, क्योंकि कि जहर से जुड़ी टॉक्सिकोलॉजी रिपोर्ट नहीं आई है। इसके बाद ही तय होगा कि मौत सामान्य थी या किसी साजिश के तहत हुई। ट्रम्प ने कहा कि मौत से कुछ घंटे पहले उनकी ग्राहम से बात हुई थी। ग्राहम की आवाज ठीक

बात कर रहा था। अब यूक्रेन से लौटने के बाद ग्राहम की मौत होना महज एक संयोग नहीं। ग्राहम की मौत में रूस का नाम क्यों आ रहा है? जवाब: ग्राहम की छवि रूस और ईरान के कट्टर विरोधी नेता की थी। 11 जुलाई को 10वें यूक्रेन दौरे से लौटने के कुछ ही घंटों बाद उनकी मौत हो गई, जबकि जाते वक्त वे स्वास्थ्य थे।



जरीन खान पैन्स पर भड़कीं, कहा- फालतूगिरी मत करना, हद में रहकर बात करो, बर्दाश्त नहीं करूंगी, फोटोग्राफर ने सामने ड्रेस ट्राई करने को कहा

6 से 8 साल में पीरियड्स और 40 में मेनोपॉज़, क्या समय से पहले बदल रही हैं की बेटियों की 'बायोलॉजिकल क्लॉक'?

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस जरीन खान का एक वीडियो

तभी पैपराजी ने उनके ग्रे हेयर पर कमेंट किया, जिसके जवाब

चलते हुए, ये सब नहीं चलेगा अभी। बंद करो ये सब। बहुत



सोशल मीडिया पर सामने आया है, जिसमें वे पैपराजी पर बुरी तरह गुस्सा करती नजर आ रही हैं। एक ब्रांड इवेंट के दौरान जरीन ने पैपराजी को फोटकार लगाते हुए कहा की मेरे साथ फालतूगिरी की बातें नहीं करना। उन्होंने सख्त लहजे में सामने वाले को अपनी हद में रहने की हिदायत दी। दरअसल जरीन खान मुंबई में एक क्लोदिंग ब्रांड के प्रमोशन इवेंट में पहुंची थीं। वे हरे रंग की ड्रेस पहने हुए मीडिया के कैमरों के सामने डेनिम जैकेट और जींस को डिस्ले कर रही थीं। इसी दौरान वहां मौजूद पैपराजी ने उनसे कहा की इस ड्राई करके दिखाओ। एक्ट्रेस को ये बात बिल्कुल पसंद नहीं आई। जरीन खान ने कहा, 'फालतूगिरी की बातें नहीं करना मेरे साथ, क्योंकि मैं ऐसी चीजें बर्दाश्त करने वालों में से नहीं हूँ। अपनी हद में रहकर बात करना।' यह बात कहते हुए जरीन के चेहरे पर साफ तौर पर गुस्सा देखा जा सकता है। हाल ही में नेहा धूपिया भी दे चुकी हिदायत-इससे पहले गोल्ड स्टीमिंग अवॉर्ड्स सेरेमनी में नेहा धूपिया पैपराजी पर भड़क गई थीं। एक्ट्रेस ने बैंक शॉट लेने और उन्हें पोस्ट करने पर नाराजगी जाहिर की और पैपराजी को कड़े शब्दों में वॉर्निंग भी दी। सेरेमनी से नेहा धूपिया अवॉर्ड लेकर निकल रही थीं।

में भड़कते हुए उन्होंने कहा है, 'बोल लिया? कर लिया? ये

इज्जत से आप लोगों से बात करते हैं, ये सब मत करो। मत

पैपराजी प्राइवसी देने के बजाए लगातार उनका वीडियो ले रहे थे। ये देख एक्ट्रेस भड़क गई और कहा- इधर ही आ जाओ। सलमान भी पैपराजी पर भड़के थे- वहीं, पिछले महीने सलमान खान भी पैपराजी पर भड़क गए थे। दरअसल, वे हिंदुजा अस्पताल पहुंचे थे, जहां से निकलते समय पैपराजी के शोर से एक्टर भड़क गए थे। हालांकि, बाद में जब सलमान फिल्म राजा शिवाजी की सक्सेस पार्टी में पहुंचे, तब सभी पैपराजी ने उनसे माफी मांगी थी। सलमान जैसे ही पार्टी में पहुंचे, वैसे ही सभी पैपराजी ने उन्हें घेर लिया और माफी मांगने लगे। सभी एक साथ, 'सॉरी भाईजान, जोर से बोली सॉरी', कहते दिखे। इसके बाद सलमान ने भी उनकी माफी कबूल कर ली थी। गोविंदा के बॉडीगार्ड्स की हुई बहस-बता दें कि इस पहले गोविंदा के बॉडीगार्ड्स की भी



बदतमीजी से बैंक शॉट कौन लेता है तुम लोगों में से? कौन लेता है? छापता कौन है? मत करो। मेरा नहीं करना है, किसी का नहीं करना है। बोल-बोलकर थक गए हैं।' आगे एक्ट्रेस ने कहा, 'हम लोगों का काम नहीं है ये। हम बाहर आते हैं, तो आप लोग वहां ये सब करते हैं, बैंग उठाकर, बुक उठाकर, पीछे से

करो, बिल्कुल ये सब मत करो।' ये एक्ट्रेस भी पैपराजी पर हाल ही में भड़के-मलाइका अरोड़ा ने लगाई थी पैपराजी की क्लास कुछ समय पहले ही मलाइका अरोड़ा का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें वो पैपराजी पर गुस्सा करती दिखी थीं। दरअसल, एक इवेंट के बाद मलाइका एक शख्स से बात कर रही थीं, लेकिन

पैपराजी से बहस हो चुकी है। दरअसल, गोविंदा पिछले एक इवेंट में पहुंचे थे। वहां से निकलते हुए उन्हें पैपराजी ने घेर लिया था। जब उनके गार्ड्स ने निकलने की जगह बनाने के लिए लोगों को पीछे किया, तो पैपराजी ने आरोप लगाया कि उन्हें धक्का दिया गया। विवाद बढ़ने पर गोविंदा को खुद बीच-बचाव करना पड़ा था।

मेरी बेटी को लगता है, वो मोटी है-अपनी तुलना सोशल मीडिया वाली लड़कियों से करती है और दुखी होती है,

उसे कैसे समझाऊं?

जयपुर। आज के आधुनिक युग में हमारी पीढ़ी हमसे विपरीत सोशल मीडिया से बहुत जल्दी

दोस्तों से वैलिडेशन पाने की चाहत बढ़ती है। इसके कारण परफेक्ट दिखने का दबाव बनता है। ऐसे

है और नेगेटिव भी। जब कोई खुद को दूसरों से कम सुंदर या कम आकर्षक समझने लगे तो इसे

फिल्टर, मेकअप, एडिटिंग और कैमरा एंगल की मदद से 'परफेक्ट' बनाए जाते हैं। बच्चे असल जिंदगी और सोशल मीडिया के बीच फर्क नहीं कर पाते हैं। टीनएज में बॉडी इमेज को लेकर चिंता के पीछे कई अन्य वजहें भी हैं। सोशल मीडिया का बॉडी इमेज पर प्रभाव- टीनएज बॉडी इमेज पर अब तक कई स्टडीज हो चुकी हैं, जो बताती हैं कि सोशल मीडिया और इंटरनेट किशोर लड़कियों के आत्मविश्वास, मेंटल हेल्थ और खुद को देखने के नजरिए को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। साल 2023 में 'अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन' (एपीए) की एक स्टडी के मुताबिक, टीनएज लड़कियां सोशल मीडिया पर जितना ज्यादा समय बिताती हैं, उनमें बॉडी इमेज को लेकर असंतोष उतना ही बढ़ता है। एडिटेड तस्वीरें, ब्यूटी फिल्टर्स और 'परफेक्ट बॉडी' कंटेंट देखने से टीनएजर्स में खुद की तुलना करने

32फीसदी किशोरियों ने माना कि जब वे अपनी बॉडी को लेकर पहले से परेशान होती थीं, तब इंस्टाग्राम उनकी समस्या और बढ़ा देता था। आइए, अब इस समस्या के समाधान पर बात करते हैं- बेटी की भावनाओं को हल्के में न लें-अक्सर माता-पिता अपनी टीनएज बेटी को समझाने के लिए तुरंत बोल देते हैं- 'तुम बिल्कुल ठीक लगती हो।' 'तुम बेवजह सोच रही हो।' 'इतनी छोटी बात पर परेशान मत हो।' हालांकि ऐसा कहने के पीछे प्यार होता है, लेकिन कई बार बेटी ये सोच सकती है कि उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। इसलिए सबसे पहले उसकी बात सुनिए। अगर वह कहती है कि उसे अपनी स्किन, वजन या हाइट पसंद नहीं है, तो तुरंत समझाने की बजाय पूछें कि- 'तुम ऐसा क्यों महसूस कर रही हो?' 'क्या किसी ने कुछ कहा है?' 'क्या सोशल मीडिया देखकर ऐसा लगता है?'

जब बच्चे अपनी बात खुलकर कह पाते हैं, तो उन्हें भावनात्मक रूप से सुरक्षा का अहसास होता है। सोशल मीडिया की 'परफेक्ट दुनिया' का सच समझाएं-बेटी को बताएं कि सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी जिंदगी का 'सबसे अच्छा हिस्सा' दिखाता है। कोई अपनी परेशानियां और इनसिक्योरिटीज नहीं दिखाता। बच्चे यह नहीं समझ पाते कि- ज्यादातर तस्वीरें फिल्टर्ड और एडिट की हुई होती हैं। तस्वीरों में कैमरा एंगल, मेकअप और लाइटिंग बहुत फर्क डालते हैं। सोशल मीडिया पर लोग अपनी जिंदगी का सिर्फ 'बेस्ट पार्ट' दिखाते हैं। बेटी से खुलकर इस बारे में बात करें कि- सोशल मीडिया रियल लाइफ नहीं है। हर इंसान अपने आप में खूबसूरत होता है। हर किसी की ग्रोथ अलग स्पीड से होती है। सुंदरता का कोई एक तय पैमाना नहीं होता। व्यक्ति मन से सुंदर होता है। सिर्फ लुक्स की तारीफ न करें-अगर बच्चों को हमेशा सिर्फ 'तुम बहुत सुंदर लग रही हो' जैसे कॉमप्लिमेंट मिलते हैं, तो वे अपनी पहचान को केवल लुक्स से जोड़ने

लगे हैं। बेटी को यह समझाएं कि खूबसूरती सिर्फ चेहरे, रंग या शरीर तक सीमित नहीं होती। असली खूबसूरती में कई चीजें शामिल होती हैं-आत्मविश्वास, व्यवहार, दयालुता, सोच,ईमानदारी, दूसरों के प्रति सम्मान, बच्ची को बताएं कि दुनिया में हर इंसान अलग है और यही

कम या ज्यादा खाने लगे। लोगों से मिलना-जुलना कम कर दे। हर समय अपनी फोटो को लेकर परेशान रहे। लगातार उदास या चिड़चिड़ी रहने लगे। सोशल मीडिया के बिना बेचैन महसूस करे। तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए। जरूरत पड़े तो काउंसल साइकोलॉजिस्ट या काउंसलर की मदद लेना बेहतर है। अंत में यही कहूंगी कि आपकी बेटी को इस समय सबसे ज्यादा जरूरत 'परफेक्ट दिखने' की नहीं, बल्कि यह महसूस करने की है कि वह जैसी है, वैसी ही प्यार, सम्मान और स्वीकार्यता की हकदार है। जब घर से उसे भरोसा, भावनात्मक सुरक्षा और बिना शर्त प्यार मिलेगा, तो धीरे-धीरे वह खुद को दूसरों से तुलना करने की बजाय अपनी खूबियों को पहचानना सीख जाएगी। याद रखिए, बच्चों का आत्मविश्वास एक दिन में नहीं बनता। यह रोज की छोटी-छोटी बातचीत, सपोर्ट और स्वीकार्यता से मजबूत होता है।



प्रभावित हो जाती है तो ऐसा होना स्वाभाविक है विषय को और गहराई से समझे एक्सपर्ट: डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं दिल्ली से हूँ। मेरी 14 साल की बेटी है। पिछले कुछ महीनों से मैं नोटिस कर रही हूँ कि वह अपने लुक्स और बॉडी को लेकर काफी इनसिक्योर महसूस करने लगी है। कभी वह अपने वजन को लेकर परेशान रहती हैं, तो कभी अपनी स्किन या हाइट को लेकर। वह अक्सर अपनी तुलना सोशल मीडिया पर दिखने वाली लड़कियों से करती हैं और कई बार खुद को कमतर महसूस करती हैं। मुझे उसकी चिंता हो रही है। उसे कैसे समझाऊं कि असली खूबसूरती क्या होती है और उसका आत्मविश्वास कैसे बढ़ाऊं? जबब-सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। किशोरावस्था यानी टीनएज वह समय है, जब बच्चे अपनी बॉडी, लुक्स और दूसरों की राय को लेकर सेंसिटिव होते हैं। प्यूबर्टी की एज यानी 13-18 साल की उम्र में तेजी से शारीरिक और मानसिक बदलाव होते हैं। इस उम्र में सोशल मीडिया ट्रेंड्स और

में अपने लुक्स को लेकर इनसिक्योर महसूस करना कॉमन है। हालांकि इसे सिर्फ एक फेज कहकर नजरअंदाज नहीं करना

नेगेटिव बॉडी इमेज कहा जाता है। टीनएज में बॉडी इमेज को लेकर चिंता क्यों होती है? इस फेज में शरीर और भावनाओं दोनों



की आदत बढ़ती है। इससे एंजाइटी, लो सेल्फ-एस्टीम और ईटिंग डिसऑर्डर का रिस्क बढ़ता है। वहीं साल 2021 में 'मेटा' की इंटरनल रिसर्च लीक होने वेग बाद सामने आया कि इंस्टाग्राम टीनएज लड़कियों की बॉडी इमेज पर नेगेटिव असर डाल रहा है। इस स्टडी में करीब

जब बच्चे अपनी बात खुलकर कह पाते हैं, तो उन्हें भावनात्मक रूप से सुरक्षा का अहसास होता है। सोशल मीडिया की 'परफेक्ट दुनिया' का सच समझाएं-बेटी को बताएं कि सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी जिंदगी का 'सबसे अच्छा हिस्सा' दिखाता है। कोई अपनी परेशानियां और इनसिक्योरिटीज नहीं दिखाता। बच्चे यह नहीं समझ पाते कि- ज्यादातर तस्वीरें फिल्टर्ड और एडिट की हुई होती हैं। तस्वीरों में कैमरा एंगल, मेकअप और लाइटिंग बहुत फर्क डालते हैं। सोशल मीडिया पर लोग अपनी जिंदगी का सिर्फ 'बेस्ट पार्ट' दिखाते हैं। बेटी से खुलकर इस बारे में बात करें कि- सोशल मीडिया रियल लाइफ नहीं है। हर इंसान अपने आप में खूबसूरत होता है। हर किसी की ग्रोथ अलग स्पीड से होती है। सुंदरता का कोई एक तय पैमाना नहीं होता। व्यक्ति मन से सुंदर होता है। सिर्फ लुक्स की तारीफ न करें-अगर बच्चों को हमेशा सिर्फ 'तुम बहुत सुंदर लग रही हो' जैसे कॉमप्लिमेंट मिलते हैं, तो वे अपनी पहचान को केवल लुक्स से जोड़ने



उसकी सबसे बड़ी खूबी है। इसके साथ ही आप बेटी की दूसरी खूबियों की तारीफ करें। जैसेकि- उसकी मेहनत, उसका व्यवहार, उसकी समझदारी, उसकी किरिएटिविटी, उसकी हॉबी, उसकी दयालुता, जब बच्ची समझती है कि उसकी वैल्यू सिर्फ चेहरे या बॉडी से तय नहीं होती, तब उसका आत्मविश्वास मजबूत होता है। घर का माहौल पॉजिटिव रखें-बच्चे सिर्फ बातें नहीं सुनते, वे घर का माहौल भी महसूस करते हैं। अगर घर में बार-बार वजन, रंग, हाइट या लुक्स को लेकर बातें होती हैं। उदाहरण के लिए-तुम मोटी लग रही हो।' 'थोड़ा गोरा रंग होता तो अच्छा लगता।' 'कितना वजन बढ़ गया है।' ऐसी बातें बच्चे के मन में गहराई तक बैठ सकती हैं। इसलिए कोशिश करें कि घर में-बेटी

इनसिक्योरिटी महसूस करते हैं, क्योंकि उन्हें इमोशनल सपोर्ट की जरूरत होती है। अपनी बेटी के साथ समय बिताएं। उसके साथ वॉक पर जाइए। उसकी हॉबी बढ़ाव दीजिए। उसकी बातों को ध्यान से सुनिए। साथ खाना बनाइए। जब बच्चे को लगता है कि उसे बिना किसी जजमेंट के स्वीकार किया जा रहा है, तो उसका आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। सोशल मीडिया की तुलना बच्चों के मन में हीन भावना पैदा कर सकती है। अगर घर का माहौल सकारात्मक हो, बॉडी शोमिंग न हो और बच्चे की खूबियों को सराहा जाए, तो वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना सीखते हैं। कब सतर्क होने की जरूरत है? अगर बच्ची-खुद को कमतर आंकने लगे।खाना बहुत

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक

डॉ. दीपक अरोरा

द्वारा रामा प्रिंटर्स

53/25/1 ए बेली रोड

न्यू कट्टरा प्रयागराज

(उ.प्र.) 211002 से

मुद्रित एवं सी-41युपी

एसआईसीसी औद्योगिक

क्षेत्र नैनी प्रयागराज।

संपादक/प्रकाशक

डा.पुनीत अरोरा

मो.नं.09415608710

RNINO.UPHIN.2016/63398

www.adhuniksamachar.com

नोट:- इस समाचार पत्र में

प्रकाशित समस्त समाचारों के

चयन एवं सम्पादन हेतु

पीठाचारवी0 एक्ट के अन्तर्गत

उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न

समस्त विवाद इलाहाबाद

न्यायालय के अधीन ही होगा।